



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 63]

नई दिल्ली, सोमवार, मार्च 20, 2017/फाल्गुन 29, 1938

No. 63]

NEW DELHI, MONDAY, MARCH 20, 2017/PHALGUNA 29, 1938

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटन-रोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 20 मार्च, 2017

अंतिम जांच परिणाम

**विषय :** ईरान के मूल के अथवा वहां से निर्यातित 4 मिमी. से 12 मिमी. (दोनों सम्मिलित) क्लियर फ्लोट ग्लास के आयातों से संबंधित पाटन-रोधी जांच करने के संबंध में।

**संख्या 14/7/2015-डीजीएडी.**—समय-समय पर यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतद्पश्चात् अधिनियम भी कहा गया है) और उसकी समय-समय पर यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन और संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे एतद्पश्चात् नियमावली भी कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए;

2. यतः निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें आगे प्राधिकारी भी कहा गया है) को नियमावली के अंतर्गत मेसर्ज प्लस ग्लास इंडस्ट्री लिमिटेड, मेसर्ज एचएनजी फ्लोट ग्लास लिमिटेड और मेसर्ज सेंट-गोबैन इंडिया प्राईवेट लिमिटेड (जिन्हें आगे याचिकादाता अथवा आवेदक भी कहा है) से एक लिखित आवेदन-पत्र प्राप्त हुआ है जिसमें उन्होंने ईरान (जिन्हें आगे संबद्ध देश भी कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित 4 मिमी. से 12 मिमी. (दोनों सम्मिलित) (जिन्हें आगे संबद्ध वस्तुएं भी कहा गया है) क्लियर फ्लोट ग्लास के पाटन होने का आरोप लगाया है।

3. यतः प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की ओर से आवेदकों द्वारा प्रस्तुत किये गये पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर जांच की शुरुआत को यथोचित सिद्ध करते हुए भारत के राजपत्र असाधारण में प्रकाशित दिनांक 23 दिसंबर, 2015 की अधिसूचना द्वारा एक सार्वजनिक सूचना जारी करके पाटन-रोधी नियमावली के उप-नियम 6 (1) के अनुसार संबद्ध देश के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के आयातों के संबंध में पाटन-रोधी जांच की शुरुआत की थी, ताकि कथित पाटन की मौजूदगी, उसकी मात्रा और प्रभाव का निर्धारण किया जा सके और पाटन-रोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की जा सके, जिसे यदि लगाया जाए तो वह घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिये पर्याप्त होगी।

#### क. क्रिया-विधि

4. इस जांच में निम्नोक्त वर्णित क्रिया-विधि का अनुसरण किया गया है:-

- (1) प्राधिकारी ने पाटन-रोधी नियमावली के नियम 5 के उप-नियम (5) के अनुसार जांच शुरू करने की कार्रवाई शुरू करने से पहले पाटन-रोधी आवेदन पत्र प्राप्त होने के बारे में भारत में संबद्ध देश के दूतावास को सूचित कर दिया था।
- (2) प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की ओर से प्रस्तुत किए गए पर्याप्त प्रमाणों के आधार पर संबद्ध देश के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के आयातों के संबंध में पाटन-रोधी जांच की शुरुआत करने के बारे में दिनांक 23 दिसंबर, 2015 को एक सार्वजनिक अधिसूचना जारी की थी संख्या जो कि भारत के राजपत्र असाधारण में प्रकाशित हुई थी।
- (3) प्राधिकारी ने पत्र के साथ अधिसूचना की एक प्रति संबद्ध देशों में सभी ज्ञात निर्यातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों/उद्योग संघों (जिनके ब्यौरे घरेलू उद्योग द्वारा उपलब्ध कराए गए थे) को प्रेषित की थी और उन्हें पाटन-रोधी नियमावली के अनुसार निर्धारित समय-सीमा के भीतर लिखित रूप में अपने विचारों से अवगत कराने का अवसर प्रदान किया था।
- (4) प्राधिकारी ने पाटन-रोधी नियमावली के नियम 6 (3) के अनुसार भारत में संबद्ध देश से ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों को आवेदन-पत्र के अगोपनीय वृत्तांत की एक प्रति प्रदान की थी। आवेदन-पत्र की एक प्रति अनुरोध किए जाने पर अन्य हितबद्ध पक्षकारों को भी उपलब्ध कराई गई थी।
- (5) प्राधिकारी ने पाटन-रोधी नियमावली के अनुसार संबद्ध देशों में निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों से संबद्ध सूचना प्राप्त करने के लिए उनको निर्यातक की प्रश्नावलियां भेजीं थीं:-

(क) मेसर्ज अर्दाकन फ्लोट ग्लास कंपनी, ईरान

(ख) मेसर्ज कावेह फ्लोट ग्लास कंपनी, ईरान

- (6) मेसर्ज अर्दाकन फ्लोट ग्लास कंपनी, ईरान और ओमन से उसके संबंधित मेसर्ज सिम्बल व्हाइट इंटरनेशनल एल.एल.सी., ओमन तथा मेसर्ज कावेह फ्लोट ग्लास कंपनी, ईरान और जर्मनी से उसके संबंधित निर्यातक, मेसर्ज बिसमाक जीएमबीएच, जर्मनी ने निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत किए हैं।
- (7) पाटन-रोधी नियमावली के नियम 6 (4) के अनुसार आवश्यक सूचना मंगाने के लिए भारत में संबद्ध वस्तुओं के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/उपभोक्ताओं/प्रयोक्ता संघों को प्रश्नावलियां प्रेषित की गई थीं:-

1. एटलांटिक ट्रेडिंग-मुंबई
2. कांच घर-मुंबई
3. रजत ग्लास ट्रेडर्स-कराड
4. चंदन ग्लास ट्रेडर्स-पुणे
5. कोचर ग्लास ट्रेडर्स-भोपाल

6. गनेरीवाला ब्रदर्स प्रा.लि.- कोलकाता
7. श्योर सेफ ग्रुप/गनेरीवाला ग्लास ट्रेडर्स-कोलकाता
8. रिद्धि सिद्धि, जयपुर
9. टी.एल. वर्मा, चंडीगढ़
10. जगदीश ग्लास, दिल्ली
11. शीशमहल टफ, रोहतक
12. नूतन ग्लास हाउस (प्रा.) लिमिटेड, बंगलौर
13. महावीर ग्लास हाउस, बंगलौर
14. इंपैक्ट सेफ्टी ग्लास (प्रा.) लिमिटेड, बंगलौर
15. महावीर ग्लास, चेन्नई/नवाकर/महावीर मिरर, विशाखापत्तनम
16. ऑल इंडिया फ्लैट ग्लास मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन
17. फेडरेशन ऑफ सेफ्टी ग्लास

- (8) जांच की शुरुआत करने के संबंध में किसी भी आयातक ने उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है। उपरोक्त के अतिरिक्त जांच की कार्रवाई के दौरान ईरान ग्लास एसोसिएशन ने निवेदन किए हैं।
- (9) प्राधिकारी ने विभिन्न पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रमाणों के अगोपनीय वृत्तान्त को सार्वजनिक फाईल के रूप में उपलब्ध करा दिया है, जो कि हितबद्ध पक्षकारों के निरीक्षण के लिए खुली पड़ी हुई है।
- (10) जांच अवधि सहित विगत तीन वर्षों के लिए संबद्ध वस्तुओं के आयातों के आंकड़े प्रदान करने के लिए वाणिज्यिक आसूचना और सांख्यिकीय महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) से अनुरोध किया गया था। प्राधिकारी ने आयातों की मात्रा का परिकलन करने के लिए डीजीसीआईएंडएस द्वारा प्रदत्त किए गए आंकड़ों पर विश्वास किया है।
- (11) सामान्यतया स्वीकृत लेखाकरण सिद्धांतों (जीएएपी) और डीजीएडीमें संगत क्रिया-विधियों के आधार पर घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन की लागत और निर्माण और बिक्री की लागत के आधार पर गैर-क्षति कीमत का आकलन किया गया है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि यदि पाटन-रोधी शुल्क, पाटन मार्जिन से कम लगाया जाता है, तो क्या वह घरेलू उद्योग की क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त होगा। प्राधिकारी द्वारा पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध-3 के अंतर्गत निर्धारित सिद्धांतों के अनुसार क्षति रहित कीमत (एनआईपी) निर्धारित की है।
- (12) हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना की गोपनीयता के दावों की उनकी पर्याप्तता के संदर्भ में जांच की गई है। प्राधिकारी ने संतुष्ट होने पर जहां कहीं भी उचित था, गोपनीयता के ऐसे दावों को स्वीकार किया है और ऐसी सूचना को गोपनीय समझा है और उसे अन्य पक्षकारों के समक्ष प्रकट नहीं किया है। जहां कहीं भी संभव हुआ है, गोपनीय आधार पर सूचना प्रदान करने वाले पक्षकारों को निदेश दिए गए थे कि वे गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना के पर्याप्त अगोपनीय वृत्तान्त भी प्रस्तुत करें।
- (13) प्राधिकारी ने नियम 6 (6) के अनुसार हितबद्ध पक्षकारों को अपने विचारों को मौखिक रूप से प्रकट करने का अवसर प्रदान करने के लिए 8 जुलाई, 2016 को मौखिक सुनवाई की थी। इस मौखिक सुनवाई में जिन हितबद्ध पक्षकारों ने अपने विचार प्रस्तुत किए थे, उनसे अनुरोध किया गया था कि वे मौखिक रूप से व्यक्त किए गए अपने विचारों को लिखित में भी प्रस्तुत करें और साथ ही उत्तर भी दें। स्थिति में परिवर्तन होने पर नए प्राधिकारी के पदभार ग्रहण करने पर 2.11.2016 को हुई सुनवाई में हितबद्ध पक्षकारों को अपने विचार प्रकट करने के लिए दुबारा अवसर

प्रदान किया गया था। इस मौखिक सुनवाई में जिन हितबद्ध पक्षकारों ने अपने विचार प्रस्तुत किए थे, उनसे अनुरोध किया गया था कि वे मौखिक रूप से व्यक्त किए गए अपने विचारों को लिखित में भी प्रस्तुत करें और साथ ही उत्तर भी दें।

- (14) जांच की कार्यवाई के दौरान हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदनों पर प्राधिकारी द्वारा जहां कहीं भी आवश्यक समझा गया है, इस अंतिम जांच परिणाम में उन विचार किया गया है। साथ ही जितना आवश्यक समझा गया है, घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना और आंकड़ों की जांच की गई है।
- (15) वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ जांच की अवधि 1 जनवरी, 2014 से शुरू होकर जून, 2015 (जांच अवधि) तक की है। तथापि, क्षति का विश्लेषण करने के परिप्रेक्ष्य में अप्रैल, 2011 – मार्च, 2012, अप्रैल, 2012 – मार्च, 2013, अप्रैल, 2013 – मार्च, 2014 और जांच अवधि शामिल है।
- (16) वर्तमान जांच की कार्यवाई के दौरान हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए और प्राधिकारी द्वारा प्रासंगिक पाए गए निवेदनों का निदान इस प्रकटन विवरण में किया गया है।
- (17) इस प्रकटन विवरण में में किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा \*\*\*सूचना को गोपनीय आधार पर प्रस्तुत किया गया है तथा नियमावली के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा उसे गोपनीय माना गया है।
- (18) प्राधिकारी द्वारा जांच अवधि के दौरान प्रचलित औसत विनिमय दर को अपनाया गया है, जो कि 1 अमरीकी डालर = 62.51 रुपए है।

#### **ख. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु**

##### **उत्पादकों/निर्यातकों/आयातकों/अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदन**

5. विचाराधीन उत्पाद के संबंध में किसी भी निर्यातक, आयातक अथवा उपभोक्ता ने कोई विचार प्रस्तुत नहीं किए हैं।

##### **घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निवेदन**

6. वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ विचाराधीन उत्पाद विचाराधीन उत्पाद, “4 मिमी. से 12 मिमी. (दोनों शामिल) के रेंज की मामूली मोटाई के क्लियर फ्लोट ग्लास” हैं जिनकी मामूली मोटाई बीआईएस 14900:2000 के अनुसार है।

7. क्लियर फ्लोट ग्लास का प्रयोग निर्माण, रेफ्रीजेशन, मिरर और सौर ऊर्जा उद्योगों आदि द्वारा किया जाता है। यह उत्पाद उत्कृष्ट कोटि का ग्लास होता है। इसकी अंतरभूत क्षमता और अत्यधिक प्रकाशीय क्षमता, विकार रहित बराबर सतह आदि के कारण इस उत्पाद का अनुप्रयोग विभिन्न प्रयोजनार्थ बढ़ता जा रहा है।

8. फ्लोट ग्लास को सीमाशुल्क के अध्याय शीर्ष 70 में “ग्लास और ग्लासवेयर” के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है। तथापि, संबद्ध वस्तुओं के आयात सीमाशुल्क टैरिफ शीर्ष 7003, 7004, 7005, 7009, 7019, 7013, 7015, 7016, 7018 और 7020 के अंतर्गत किए जा रहे हैं। यह निवेदन किया जाता है कि सीमाशुल्क का यह वर्गीकरण निर्देशात्मक है और यह किसी भी तरीके से सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के उत्पाद के कार्यक्षेत्र पर बाध्यकारी नहीं है।

9. घरेलू उद्योग द्वारा निर्मित और संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तुओं के बीच कोई ज्ञात अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा निर्मित और संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तुएं भौतिक और रासायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी, कार्य और प्रयोग, उत्पाद विनिर्देशन, कीमत निर्धारण, वितरण और विपणन तथा वस्तुओं के टैरिफ वर्गीकरण जैसी अनिवार्य उत्पाद विशेषताओं की दृष्टि से तुलनीय हैं।

##### **प्राधिकारी की जांच**

10. वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ “4 मिमी. से 12 मिमी. (दोनों शामिल) के रेंज की मामूली मोटाई के क्लियर फ्लोट ग्लास” हैं (जिन्हें आगे “संबद्ध वस्तुएं” भी कहा गया है), विचाराधीन उत्पाद है।

11. क्लियर फ्लोट ग्लास का प्रयोग निर्माण, रेफ्रीजेशन, मिरर और सौर ऊर्जा उद्योगों आदि द्वारा किया जाता है। यह उत्पाद उत्कृष्ट कोटि का ग्लास होता है। इसकी अंतरभूत क्षमता और अत्यधिक दृष्टिक स्पष्टता, विकार रहित सपाट तल आदि

के कारण इस उत्पाद का अनुप्रयोग विभिन्न प्रयोजनार्थ बढ़ता जा रहा है। इस उत्पाद को सीमाशुल्क के अध्याय शीर्ष 70 में "ग्लास और ग्लासवेयर" के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है। तथापि, संबद्ध वस्तुओं के आयात सीमाशुल्क टैरिफ शीर्ष 7003, 7004, 7005, 7009, 7019, 7013, 7015, 7016, 7018 और 7020 के अंतर्गत भी किए जा रहे हैं। यह निवेदन किया जाता है कि सीमाशुल्क का यह वर्गीकरण निर्देशात्मक है और यह किसी भी तरीके से सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के उत्पाद के कार्यक्षेत्र पर बाध्यकारी नहीं है।

12. समान वस्तु के संबंध में पाटन-रोधी नियमावली के नियम 2 (घ) में उल्लिखित प्रावधान निम्नानुसार है:-

*"समान वस्तु" से ऐसी वस्तु अभिप्रेत है जो भारत में पाटने के कारण जांच के अंतर्गत वस्तु के सभी प्रकार से समरूप या समान है अथवा ऐसी वस्तु के न होने पर अन्य वस्तु जो कि यद्यपि सभी प्रकार से समनुरूप नहीं है परंतु जांचाधीन वस्तुओं के अत्यधिक सदृश विशेषताएं रखती हैं।*

13. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा निर्मित और संबद्ध देश से निर्यातित विचाराधीन उत्पाद के बीच कोई ज्ञात अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा निर्मित और संबद्ध देश से आयातित विचाराधीन उत्पाद, भौतिक और रसायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी, कार्य और प्रयोग, उत्पाद विनिर्देशन, कीमत निर्धारण, वितरण और विपणन तथा वस्तुओं के टैरिफ वर्गीकरण जैसी अनिवार्य उत्पाद विशेषताओं की दृष्टि से तुलनीय है। घरेलू उद्योग द्वारा निर्मित और संबद्ध देश से निर्यातित विचाराधीन उत्पाद समान वस्तुएं हैं, जो कि पाटन-रोधी नियमावली के नियम 2 (घ) में उल्लिखित परिभाषा और उसके दायरे के भीतर आती हैं।

ग. घरेलू उद्योग और उसका आधार

उत्पादकों/निर्यातकों/आयातकों/अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदन

14. कुछ हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग ने अपने अगोपनीय वृत्तांत में उत्पादन से संबंधित सूचना को इसलिए रोके रखा है क्योंकि उनका नियम 2(ख) में उल्लिखित प्रावधान के अनुसार घरेलू उद्योग होने का आधार नहीं बनता है।

घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निवेदन

15. यह याचिका मेसर्स गोल्ड प्लस ग्लास इंडस्ट्री लि., मेसर्स एचएनजी फ्लोट ग्लास लि. (एच एन जी) और मेसर्स सेंट-गोबैन इंडिया प्रा. लि. (एस जी आई पी एल) द्वारा दायर की गई है, जिनका कुल भारतीय उत्पादन में योगदान 50 प्रतिशत से भी अधिक है। इसके अतिरिक्त, यह निवेदन किया जाता है कि याचिकादाताओं ने संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के न कोई आयात किए हैं और न ही वे संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के किसी आयातक से संबंधित हैं। इसलिए उनका आवेदन पत्र पाटन-रोधी नियमावली के नियम के अंतर्गत घरेलू उद्योग के "आधार" की आवश्यकताओं को पूरा करता है और याचिकादाता पाटन-रोधी नियमावली के नियम 2(ख) में उल्लिखित प्रावधान के अनुसार घरेलू उद्योग बनते हैं।

प्राधिकारी द्वारा जांच

16. पाटन-रोधी नियमावली का नियम 2 (ख) में घरेलू उद्योग को निम्नानुसार परिभाषित किया गया है:-

*"घरेलू उद्योग" का तात्पर्य ऐसे समग्र घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में संलग्न हैं अथवा ऐसे उत्पादकों से है जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा भाग बनता है सिवाए उस स्थिति के जब ऐसे उत्पादक आरोपित पाटित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित होते हैं अथवा वे स्वयं उसके आयातक होते हैं, तो ऐसे मामले में "घरेलू उद्योग" पद का अर्थ शेष उत्पादकों के संदर्भ में लगाया जा सकता है।*

17. यह आवेदन पत्र मेसर्स गोल्ड प्लस ग्लास इंडस्ट्री लि., मेसर्स एचएनजी फ्लोट ग्लास लि. (एच एन जी) और मेसर्स सेंट-गोबैन इंडिया प्रा. लि. (एस जी आई पी एल) द्वारा संयुक्त रूप से प्रस्तुत किया गया है और कुल उत्पादन में इन इन कंपनियों का अंशदान 84 प्रतिशत बनता है। इसके अतिरिक्त, दो अन्य उत्पादक भी हैं, जिनके नाम मै0 असाही इंडिया ग्लास लिमिटेड (एआईएस) और मै0 गुजरात गार्डियन लिमिटेड (जीजीएल) हैं, जिन्होंने इस याचिका का न तो समर्थन किया है और न ही उसका विरोध किया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि भारत में निर्मित समान उत्पाद के कुल उत्पादन में याचिकादाताओं

का प्रमुख अंशदान है। इसके अतिरिक्त यह भी नोट किया गया है कि किसी भी याचिकादाता ने विचाराधीन उत्पाद का कोई आयात नहीं किया है और न ही उनमें से कोई विचाराधीन उत्पाद के आयातक अथवा उत्पादक से संबंधित हैं। इसलिए, याचिकादाता पाटन-रोधी नियमावली के नियम 2(ख) में उल्लिखित प्रावधान के अनुसार "घरेलू उद्योग" बनते हैं। चूंकि कुल घरेलू उत्पादन में आवेदन प्रस्तुत करने वाले आवेदकों का अंशदान 50 प्रतिशत से भी अधिक बनता है, इसलिए वे पाटन-रोधी नियमावली के नियम 5 के अंतर्गत उल्लिखित प्रावधान के अनुसार घरेलू उद्योग बनते हैं।

#### घ. गोपनीयता

##### उत्पादकों/निर्यातकों/आयातकों/अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदन

18. गोपनीयता के संबंध में वर्तमान जांच की कार्यवाही के दौरान उत्पादकों/ निर्यातकों/आयातकों/अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए और प्राधिकारी द्वारा प्रासंगिक पाए गए निवेदन निम्नानुसार हैं :-

- (1) याचिका में अत्यधिक गोपनीयता बनाए रखी गई है। याचिका में मात्रा से संबंधित सूचना के बारे में कोई संपूर्ण सूचना प्रस्तुत नहीं की गई है।
- (2) याचिकादाता के वितरण माध्यमों, कमीशन/छूट नीति, ऋण की शर्तों, सामान्य मूल्य के परिकलन आदि से संबंधित नीतिगत सूचना को भी गोपनीय बनाए रखा गया है।
- (3) घरेलू उद्योग ने अत्यधिक गोपनीयता बनाए रखने का दावा किया है और उसको इसकी अनुमति भी दी गई है जोकि उन्होंने सार्वजनिक फाइल के रूप में अपनी वार्षिक रिपोर्ट में उपलब्ध नहीं कराई है।
- (4) साथ ही घरेलू उद्योग ने अपनी लागत निर्धारण के ब्यौरे भी प्रस्तुत नहीं किए हैं।

##### घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निवेदन

19. गोपनीयता के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए और प्राधिकारी द्वारा प्रासंगिक पाए गए निवेदन निम्नानुसार हैं :-

- (1) निर्यातकों ने अत्यधिक गोपनीयता का दावा किया है। निर्यातकों ने न केवल मात्रा से संबंधित सूचना की गोपनीयता का दावा किया है, बल्कि उन्होंने अपने उत्तर के कुछ व्याख्यात्मक अंश को भी गोपनीय रखा हुआ है।
- (2) निर्यातकों के प्रश्नावली के उत्तर के अगोपनीय वृतांत, उनकि द्वारा प्रस्तुत किए गए गोपनीय वृतांत की ही सही अनुकृति हैं।
- (3) याचिका दाता ने उनको प्रस्तुत की गई सूचना की गोपनीयता का दावा किया है जिसकी अनुमति पाटन-रोधी नियमावली के नियम 7 के अंतर्गत दी गई है तथा ऐसी सूचना का सार्थक संक्षिप्त विवरण को भी उसके वर्णनात्मक विवरण की सूचना के साथ याचिका के अगोपनीय वृतांत में प्रदान किया गया है। हितबद्ध पक्षकारों का यह दावा निराधार है कि याचिकादाता ने अत्यधिक गोपनीयता बनाए रखने का दावा किया है।

#### प्राधिकारी की जांच

20. वर्तमान जांच की कार्यवाही के दौरान गोपनीयता के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए और प्राधिकारी द्वारा प्रासंगिक पाए गए निवेदनों की जांच की गई है और उनका निदान किया गया है, जो कि निम्नानुसार है:-

- (1) सूचना की गोपनीयता के संबंध में पाटन-रोधी नियमावली के नियम-7 में उल्लिखित व्यवस्था निम्नानुसार है:-

*गोपनीय सूचना : (1) नियम 6 के उपनियमों (2), (3) और (7), नियम 12 के उपनियम (2), नियम 15 के उपनियम (4) और नियम 17 के उपनियम (4) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी जांच की प्रक्रिया में नियम 5 के उपनियम (1) के अंतर्गत प्राप्त आवेदनों के प्रतियां या किसी पक्षकार द्वारा गोपनीय आधार पर निर्दिष्ट प्राधिकारी को प्रस्तुत किसी अन्य सूचना के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी उसकी गोपनीयता से संतुष्ट होने पर उस सूचना को गोपनीय मानेंगे और ऐसी सूचना देने वाले पक्षकार से स्पष्ट प्राधिकार के बिना किसी अन्य पक्षकार को ऐसी किसी सूचना का प्रकटन नहीं करेंगे।*

(2) निर्दिष्ट प्राधिकारी गोपनीय अधिकारी पर सूचना प्रस्तुत करने वाले पक्षकारों से उसका अगोपनीय सारांश प्रस्तुत करने के लिए कह सकते हैं और यदि ऐसी सूचना प्रस्तुत करने वाले किसी पक्षकार की राय में उस सूचना का सारांश नहीं हो सकता है तो वह पक्षकार निर्दिष्ट प्राधिकारी को इस बात के कारण संबंधी विवरण प्रस्तुत करेगा कि सारांश करना संभव क्यों नहीं है।

(3) उप नियम (2) में किसी बात के होते हुए भी यदि निर्दिष्ट प्राधिकारी इस बात से संतुष्ट है कि गोपनीयता का अनुरोध अनावश्यक है या सूचना देने वाला या तो सूचना को सार्वजनिक नहीं करना चाहता है या उसकी सामान्य रूप में या सारांश रूप में प्रकटन नहीं करना चाहता है तो वह ऐसी सूचना पर ध्यान नहीं दे सकते हैं।

- (2) हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना की गोपनीय के दावों की उनकी पर्याप्तता के संदर्भ में जांच की गई है। प्राधिकारी ने संतुष्ट होने पर जहां कहीं भी उचित था, गोपनीयता के ऐसे दावों को स्वीकार किया है और ऐसी सूचना को गोपनीय समझा है और उसे अन्य पक्षकारों के समक्ष प्रकट नहीं किया है। जहां कहीं भी संभव हुआ है, वहां गोपनीय आधार पर सूचना प्रदान करने वाले हितबद्ध पक्षकारों को निदेश दिया गया था कि वे गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना का अगोपनीय वृत्तान्त भी प्रस्तुत करें। प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए साक्ष्यों के अगोपनीय वृत्तान्त को सार्वजनिक फाईल के रूप में उपलब्ध कराया है।

#### ड. विविध निवेदन

##### उत्पादकों/निर्यातकों/आयातकों/अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदन

21. उत्पादकों/निर्यातकों/आयातकों/अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए और प्राधिकारी द्वारा प्रासंगिक पाए गए विविध निवेदन निम्नानुसार हैं :-

- (1) घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत किया गया आवेदन पत्र प्राधिकारी द्वारा निर्धारित प्रारूप में और तरीके से प्रस्तुत नहीं किया गया है।
- (2) याचिका में कमी है और इसलिए जांच को समाप्त कर दिए जाने की आवश्यकता है।
- (3) घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत किया गया प्रमाणन सही नहीं है और उसमें जांच की पूर्ण अवधि को शामिल नहीं किया गया है।
- (4) घरेलू उद्योग ने प्राधिकारी द्वारा निर्धारित प्रपत्रों के अनुसार प्रपत्र 4-ख में अगोपनीय वृत्तान्त में पूर्व सूचना प्रस्तुत नहीं की है।

##### घरेलू द्वारा किए गए निवेदन

22. घरेलू उद्योग द्वारा किए गए और प्राधिकारी द्वारा प्रासंगिक पाए गए विविध निवेदन निम्नानुसार हैं :-

- (1) प्रतिवादी निर्यातकों की आपूर्ति श्रृंखला पूरी नहीं है और इसलिए उनके उत्तर को खारिज किए जाने की आवश्यकता है।
- (2) जांच अवधि के दौरान ईरान, ओमान और जर्मनी में प्रचलित विनिमय दर का प्रकटन किए जाने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, घरेलू उद्योग ने प्राधिकारी को इसका प्रकटन करने का भी अनुरोध किया है कि क्या उत्पादक/निर्यातक भारित औसत दर पर अथवा मासिक दर पर दावा कर रहे हैं।
- (3) जांच शुरू करने के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि उक्त प्रमाण पत्र जांच शुरू करने से पहले हस्ताक्षर किए गए थे। तथापि, चूंकि प्राधिकारी ने जांच शुरूआत करने के समय जांच अवधि को बढ़ा दिया था, इसलिए जनवरी, 2014 से जून, 2015 तक की संशोधित जांच अवधि के लिए जांच पश्चात प्रमाण पत्रों पर पुनः हस्ताक्षर किए गए हैं।

- (4) अपूर्ण सूचना प्रस्तुत करने के संबंध में यह निवेदन किया जाता है कि घरेलू उद्योग ने निर्धारित प्रपत्र के अनुसार समस्त सूचना प्रस्तुत की है।

### प्राधिकारी द्वारा जांच

23. वर्तमान जांच की कार्यवाही के दौरान हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए तथा प्राधिकारी द्वारा प्रासंगिक पाए गए विभिन्न विविध मुद्दों की जांच की गई है, जोकि निम्नानुसार है :-

- (क) प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकारों के इस तर्क के संबंध में कि याचिका में कमी है और इसलिए जांच को समाप्त कर दिए जाने की आवश्यकता है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान जांच घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रथम दृष्टया प्रमाण के आधार पर शुरू की गई थी जिसमें पाटन, क्षति और पाटन के कारण घरेलू उद्योग को हो रही क्षति को दर्शाया गया था। पाटन-रोधी जांच शुरू करने को यथोचित ठहराने के लिए पर्याप्त प्रमाण थे और यह जांच पाटन-रोधी अधिनियम और नियमावली के अनुसार है। प्राधिकारी ने जहां कहीं भी आवश्यक हुआ है, वहां अतिरिक्त सूचना मांगी है और घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना की जांच की है।
- (ख) प्रमाण पत्रों पर तर्क के संबंध में यह नोट किया जाता है कि ये प्रमाण पत्र पूरे हैं और जांच अवधि के लिए सही हैं। कुछ अपर्याप्त प्रपत्रों के परिप्रेक्ष्य में यह नोट किया जाता है कि ये भी पूरे हैं तथा निर्धारित प्रपत्रों के अनुसार हैं।
- (ग) घरेलू उद्योग के इस आरोप के संबंध में कि प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकार की आपूर्ति श्रृंखला अपूर्ण है, इसका उल्लेख पाटन मार्जिन के परिकलन से संबंधित प्रासंगिक पैराओं में किया गया है।

### पाटन मार्जिन

#### बाजार अर्थव्यवस्था निरूपण (एमईटी), सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन

24. जबकि घरेलू उद्योग ने यह निवेदन किया है कि चीन को एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश मानते हुए चीन जनवादी गणराज्य के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण, पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा-7 में उल्लिखित प्रावधान के अनुसार तथा भारत में उत्पादन की लागत के आधार पर किया जाना चाहिए जिसमें विधिवत समंजन किए जाने के लिए बिक्री, सामान्य और प्रशासनिक व्ययों और उचित लाभ को शामिल किया जाना चाहिए क्योंकि किसी भी निर्यातक, आयातक, प्रयोक्ता और अन्य हितबद्ध पक्षकार ने इस संबंध में कोई प्रासंगिक निवेदन नहीं किया है। वर्तमान जांच में चीन के किसी भी प्रतिवादी उत्पादक/निर्यातक ने बाजार आर्थिक व्यवस्था निरूपण संबंधी प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है और न ही बाजार अर्थव्यवस्था निरूपण का दावा किया है।

### च. सामान्य मूल्य का निर्धारण

#### सामान्य मूल्य

25. धारा 9 (1) (ग) के अंतर्गत किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का तात्पर्य है:

- (1) व्यापार की सामान्य प्रक्रिया के समान वस्तु की तुलनीय कीमत जब वह उप नियम (6) के तहत बनाए गए नियमों के अनुसार यथानिर्धारित निर्यातक देश या क्षेत्र में खपत के लिए नियत हो, अथवा
- (2) जब निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समान वस्तु की बिक्री न हुई हो अथवा जब निर्यातक देश या क्षेत्र की बाजार विशेष की स्थिति अथवा उसके घरेलू बाजार में कम बिक्री मात्रा के कारण ऐसी बिक्री की उचित तुलना न हो सकती हो तो सामान्य मूल्य निम्नलिखित में से कोई एक होगा:
  - (क) समान वस्तु की तुलनीय प्रतिनिधिक कीमत जब उसका निर्यात उप धारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से किया गया हो, अथवा
  - (ख) उपधारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार यथानिर्धारित प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागत एवं लाभ हेतु उचित वृद्धि के साथ उदगम वाले देश में उक्त वस्तु की उत्पादन लागत।

परंतु यदि उक्त वस्तु का आयात उदगम वाले देश से भिन्न किसी देश से किया गया है और जहां उक्त वस्तु को निर्यात के देश से होकर केवल स्थानांतरण किया गया है अथवा ऐसी वस्तु का उत्पादन निर्यात के देश में नहीं



होता है, अथवा निर्यात के देश में कोई तुलनीय कीमत नहीं है, वहां सामान्य मूल्य का निर्धारण उदगम वाले देश में उसकी कीमत के संदर्भ में किया जाएगा।

### गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से संबंधित प्रावधान

26. पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध-1 में उल्लिखित प्रावधान निम्नानुसार हैं:-

7. "गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से आयातों के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश की कीमत अथवा संरचित मूल्य, अथवा किसी तीसरे देश से भारत सहित अन्य देशों के लिए कीमत अथवा जहां यह संभव न हो, अथवा अन्य किसी समुचित आधार पर किया जाएगा जिसमें भारत में समान वस्तु के लिए वास्तविक रूप से संदत्त अथवा भुगतान योग्य कीमत, जिनमें यदि आवश्यक हो तो लाभ की समुचित गुंजाइश भी शामिल की जाएगी निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था वाले किसी तीसरे समुचित देश का चयन उचित तरीके से किया जाएगा जिसमें संबंधित देश के विकास के स्तर तथा प्रश्नगत उत्पाद का ध्यान रखा जाएगा और चयन के समय उपलब्ध कराई गई किसी विश्वसनीय सूचना का भी ध्यान रखा जाएगा। जहां उचित हो, उचित समय सीमा के भीतर किसी अन्य बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के संबंध में इसी प्रकार के मामले में की गई जांच पर भी ध्यान दिया जाएगा। जांच से संबंधित पक्षों को बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के उपर्युक्त प्रकार से चयन के बारे में बिना किसी विलंब के सूचित किया जाएगा और उन्हें अपनी टिप्पणियां देने के लिए उचित अवधि प्रदान की जाएगी।"

8 (1) "गैर-बाजार अर्थव्यवस्था देश" शब्द का अर्थ ऐसा कोई देश है जिसे निर्दिष्ट प्राधिकारी ने लागत या कीमत निर्धारण संरचनाओं के बाजार सिद्धांतों पर प्रचालन करते हुए निर्धारित नहीं किया है क्योंकि ऐसे देश में पण्य वस्तुओं की बिक्रियां उप पैराग्राफ (3) में विनिर्दिष्ट मापदंडों के अनुसार पण्य वस्तुओं का उचित मूल्य प्रदर्शित नहीं करती हैं।

(2) ऐसी एक परिकल्पना होगी कि कोई देश जिसे जांच से पहले तीन वर्ष की अवधि के दौरान निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा या डब्ल्यूटीओ के किसी सदस्य देश के सक्षम प्राधिकारी द्वारा पाटनरोधी जांच के प्रयोजनार्थ गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश के रूप में निर्धारित किया गया है या माना गया है, को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना जाएगा;

बशर्ते कि फिर भी यह कि गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश ऐसे देश की संबंधित फर्मों निर्दिष्ट प्राधिकारी को इस आशय की सूचना और साक्ष्य उपलब्ध कराके ऐसी किसी परिकल्पना का खंडन कर सकती हैं, जो यह सिद्ध करती हों कि वह देश उप-पैराग्राफ (3) में विनिर्दिष्ट मानदंड के आधार पर एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश नहीं है।

(3) निर्दिष्ट प्राधिकारी प्रत्येक मामले में निम्नलिखित मानदंडों पर विचार करेंगे कि क्या:-

(क) कच्ची सामग्रियों सहित कीमत; लागत और निविष्टि तथा श्रम लागत, उत्पादन, बिक्रियां और निवेश के बारे में चीन जन.गण. में संबंधित फर्मों का निर्णय ऐसे बाजारी संकेतों के अनुसार किया जाता है जिसमें आपूर्ति और मांग परिलक्षित होती है और इस बारे में राज्य का अधिक हस्तक्षेप नहीं होता है और क्या प्रमुख निविष्टियों की लागत में बाजार मूल्य पर्याप्त रूप से प्रदर्शित होता है और क्या प्रमुख निविष्टियों की लागत में बाजार मूल्य पर्याप्त रूप से प्रदर्शित होते हैं;

(ख) इस प्रकार की फर्मों की उत्पादन लागत और वित्तीय स्थिति विशेषकर परिसंपत्तियों के मूल्यहास, अन्य बट्टे-खातों, वस्तु विनिमय-व्यापार और ऋणों की प्रतिपूर्ति के माध्यम से भुगतान के संदर्भ में पूर्ववर्ती गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाली प्रणाली से हुई महत्वपूर्ण विकृतियों के अध्यधीन है;

(ग) इस प्रकार की फर्में दिवालियापन और संपत्ति कानूनों के अध्यक्षीन हैं जो फर्मों के प्रचालन की कानूनी निश्चितता और स्थिरता की गारंटी देते हैं; और

(घ) विनिमय दर का परिवर्तन व्याज की दर पर किया जाता है।

बशर्ते कि फिर भी जहां इस पैरा में विनिश्चित मानदंड के आधार पर लिखित साक्ष्य द्वारा ऐसा दर्शाया गया है कि एक अथवा अधिक ऐसी फर्मों के लिए पाटन-रोधी जांच के अध्यक्षीन बाजार की दशाएं विद्यमान हैं, विनिर्दिष्ट प्राधिकारी पैराग्राफ 7 और इस पैराग्राफ में उल्लिखित सिद्धांतों के बजाए पैराग्राफ 1 से 6 में उल्लिखित सिद्धांतों को लागू कर सकते हैं।

#### उत्पादकों/निर्यातकों/आयातकों/अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदन

27. जांच की कार्रवाई के दौरान सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के संबंध में उत्पादकों/निर्यातकों/आयातकों/अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए और प्राधिकारी द्वारा प्रासंगिक पाए गए निवेदन निम्नानुसार हैं :-

- (1) घरेलू उद्योग ने सामान्य मूल्य के साथ-साथ निर्यात कीमत के लिए अपने दावे के समर्थन में कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया है। इस संबंध में यह निवेदन किया जाता है कि मूल साक्ष्य मानकों को पूरा किए बिना कोई भी जांच युक्तिसंगत नहीं होती है और इसलिए वर्तमान जांच को तत्काल समाप्त कर दिया जाना चाहिए।
- (2) संबद्ध प्रावधानों में विनिश्चित शर्तों में सामान्य मूल्य की संरचना करने के लिए एक आधार के रूप में घरेलू बिक्री कीमतों से संबंधित आंकड़ों की "अनुपलब्धता" शामिल नहीं है। इस प्रकार, आवेदन पत्र में संरचित सामान्य मूल्य के लिए उल्लिखित वैकल्पिक आधार गलत है।
- (3) घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त किए गए अंतर्देशीय भाड़े, समुद्री भाड़े, कमीशन आदि के अनुमान के समर्थन में भी कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया है। आवेदन पत्र में ऐसा कोई प्रमाण निहित नहीं है, जिससे यह पता चले कि उल्लिखित आंकड़े कैसे प्राप्त किए गए हैं और उनका संबद्ध परिकलन आधार क्या है।
- (4) याचिका में याचिकाओं द्वारा आकलित सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत को सही स्वीकार नहीं किया जा सकता क्योंकि याचिकादाताओं ने अपने परिकलन के संबंध में कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया है।
- (5) निर्दिष्ट प्राधिकारी ने भी पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा-7 में सामान्य मूल्य से संबंधित निर्धारित क्रियाविधि का अनुपालन नहीं किया है।
- (6) निर्यात कीमत के संबंध में आवेदकों द्वारा किया गया समंजन असामान्य रूप से अधिक है और उसके समर्थन में कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया है। इसलिए प्राधिकारी को निर्यात कीमत का परिकलन करते समय सही समंजन करना चाहिए।
- (7) ईरान से आयातों की कुल मात्रा बहुत कम है और यह भारत में मांग का लगभग 4 प्रतिशत भाग ही बनती है और इसलिए ईरान से आयातों के खिलाफ कोई शुल्क की सिफारिश नहीं की जानी चाहिए।

#### घरेलू द्वारा किए गए निवेदन

28. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए और प्राधिकारी द्वारा प्रासंगिक पाए गए निवेदन निम्नानुसार हैं :-

- (क) ओमान और जर्मनी से प्रतिवादी निर्यातक ईरान में उत्पादकों से अधिप्राप्त की गई और भारत को निर्यात की गई संबद्ध वस्तुओं के बीच कारोबार-वार संबंध स्थापित करने में विफल रहे हैं। इसको ध्यान में रखते हुए निर्यातकों के उत्तर प्राधिकारी द्वारा हाल ही में लिए गए निर्णयों को ध्यान में रखते हुए अस्वीकार किया जा सकता है।
- (ख) प्रतिवादी निर्यातकों ने विशेष रूप से कच्चे माल और उपयोगी मदों की पूर्ति के संबंध में प्राधिकारी से सूचना को रोककर रखा हुआ है। घरेलू उद्योग की अवधारणा के अनुसार ईरान में उत्पादक बाजार मूल्य से कम मूल्य पर कच्चे माल और उपयोगी मदें प्राप्त कर रहा है। यहां तक कि लागत निर्धारण संबंधी शीर्ष भी परिशिष्ट-8 में निर्दिष्ट नहीं किए गए हैं जिससे ऐसा संदेह उत्पन्न होता है कि वे प्राधिकारी से कुछ छिपाने का अथवा उन्हें गुमराह करने का प्रयास कर रहे हैं।

- (ग) प्रतिवादी निर्यातकों ने इस तथ्य का प्रकटन नहीं करते हुए प्राधिकारी को गुमराह किया है कि पैकिंग, भाड़े, सुपुर्दगी की शर्तों तथा भुगतान की शर्तों के संबंध में निर्यात बिक्रियों और घरेलू बिक्रियों के बीच अत्यधिक अंतर है, जबकि उन्होंने निर्यात और घरेलू बिक्रियों के बीच अंतर को दर्शाया है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने घरेलू बाजार में प्रदान की जा रही सेवा सहायता के बारे में भी कोई विवरण प्रस्तुत नहीं किए हैं।
- (घ) प्रतिवादी निर्यातकों ने एसजी एंड ए व्ययों और लाभ, जिन्हें कारखानागत निर्यात कीमत का आकलन करने के लिए घटाए जाने आवश्यकता है, के बारे में भी कोई सूचना प्रदान नहीं की है।
- (ङ.) प्राधिकारी को कारखानागत निर्यात कीमत का आकलन करने के लिए निर्यातकों द्वारा किए गए वास्तविक व्यय के अतिरिक्त, निर्यात कीमत से निर्यातकों के संपूर्ण एस जी एंड ए और लाभ को घटा देना चाहिए।

### प्राधिकारी की जांच

29. सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 9 (1) (ग) के अंतर्गत किसी वस्तु के संबंध में “सामान्य मूल्य” का तात्पर्य है :

- (1) व्यापार की सामान्य प्रक्रिया के समान वस्तु की तुलनीय कीमत जब वह उप नियम (6) के तहत बनाए गए नियमों के अनुसार यथानिर्धारित निर्यातक देश या क्षेत्र में खपत के लिए नियत हो, अथवा
- (2) जब निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समान वस्तु की बिक्री न हुई हो अथवा जब निर्यातक देश या क्षेत्र की बाजार विशेष की स्थिति अथवा उसके घरेलू बाजार में कम बिक्री मात्रा के कारण ऐसी बिक्री की उचित तुलना न हो सकती हो तो सामान्य मूल्य निम्नलिखित में से कोई एक होगा :
  - (क) समान वस्तु की तुलनीय प्रतिनिधिक कीमत जब उसका निर्यात उप धारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से किया गया हो, अथवा
  - (ख) उपधारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार यथानिर्धारित प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागत एवं लाभ हेतु उचित वृद्धि के साथ उदगम वाले देश में उक्त वस्तु की उत्पादन लागत।

30. प्राधिकारी ने ईरान से ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावलियां इस सलाह के साथ भेजी थीं कि वे निर्धारित प्रपत्र और तरीके से अपेक्षित सूचना प्रदान करें। तथापि, निम्नलिखित उत्पादकों और निर्यातकों को छोड़कर ईरान से किसी भी अन्य उत्पादक/निर्यातक ने निर्धारित प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत नहीं करके इस जांच की कार्यवाही में सहयोग नहीं दिया है।

- (क) मेसर्स अर्दाकिन फ्लोट ग्लास कंपनी, ईरान (उत्पादक)
- (ख) मेसर्स सिंबल व्हाइट इंटरनेशनल एलएलसी, ओमन (निर्यातक)
- (ग) मेसर्स कावेह फ्लोट ग्लास कंपनी, ईरान (उत्पादक)
- (घ) मेसर्स बिस्माक जीएमबीएच, जर्मनी (निर्यातक)

31. चूंकि उपरोक्त उत्पादकों/निर्यातकों ने प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत किए हैं, इसलिए प्राधिकारी का इन कंपनियों के संबंध में पृथक विशिष्ट पाटन मार्जिन निर्धारित करने का प्रस्ताव है। इन निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए प्राधिकारी द्वारा अपनाई गई सामान्य कार्य प्रणाली पहले इस तथ्य की यह जांच करने की है कि क्या प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा संबद्ध वस्तुओं की घरेलू बिक्रियां, उनके गृह बाजार में की गई हैं, जो कि उनकी प्रतिनिधिक थीं और घरेलू बिक्री कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए अर्थक्षम थीं और क्या प्रतिवादियों द्वारा प्रदान किए गए आंकड़ों के अनुसार, सामान्य व्यापारिक परीक्षण संतोषजनक ढंग से पूरा किया गया है। अन्य मामलों में अर्थात: प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा अपने गृह बाजारों में संबद्ध वस्तुओं की घरेलू बिक्रियां, घरेलू बिक्री कीमतों के आधार पर सामान्य मूल्य का

निर्धारण करने के लिए प्रतिनिधिक और अर्थक्षम नहीं हैं और जिनमें सामान्य व्यापारिक परीक्षण संतोषजनक नहीं है, उनमें संबंधित निर्यातकों द्वारा किए गए एस जी एंड ए व्यय के दावों सहित उत्पादन की लागत को उचित सत्यापन के बाद तथा 5 प्रतिशत लाभ को जोड़ने के बाद स्वीकार किया जाता है, ताकि सामान्य मूल्य का आकलन किया जा सके।

32. संबद्ध देशों में असहयोगी निर्यातकों के मामले में प्राधिकारी का प्रस्ताव करार के अनुच्छेद 6.8 के साथ पठित पाटन-रोधी नियमावली के नियम-6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण करना है।

33. प्राधिकारी का प्रस्ताव उत्पादकों/निर्यातकों के संबंध में सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन का निर्धारण निम्नोक्त अनुसार करने का है:

#### **मेसर्स कावेह फ्लोट ग्लास कंपनी, ईरान ("कावेह") का सामान्य मूल्य**

34. कावेह द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रश्नावली के उत्तर की जांच कर ली गई है और यह पाया गया है कि प्रतिवादी ने अपने उत्तर के परिशिष्ट-1 में संबद्ध वस्तुओं की घरेलू बिक्री कीमत के ब्यौरे प्रदान किए हैं। यह नोट किया गया था कि इस प्रकार से निर्धारित की गई भारित औसत घरेलू बिक्री कीमत उत्पादन की भारित औसत घरेलू लागत से कम थी और साथ ही यह भी नोट किया गया था कि लाभ उठाने वाले कारोबार कुल बिक्रियों का 20 प्रतिशत से भी अधिक थे। इसलिए, प्राधिकारी ने पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध-1 के प्रावधानों के अनुसार, केवल लाभप्रद बिक्रियों के आधार पर ही सामान्य मूल्य का निर्धारण करने की कार्यवाई की है। कावेह द्वारा दावा किए गए समंजनों की जांच की गई है और उन्हें जितना सही था, स्वीकार कर लिया गया है। इस प्रकार से निर्धारित किया गया कावेह का प्रस्तावित सामान्य मूल्य \*\*\* अमरीकी डील प्रति मी.टन है।

#### **मेसर्स कावेह फ्लोट ग्लास कंपनी, ईरान (उत्पादक) और मेसर्स बिस्माक जीएमबीएच, जर्मनी (निर्यातक) की निर्यात कीमत**

35. निर्यातक की प्रश्नावली के उत्तर (ईक्यूआर) के अनुसार जर्मनी से निर्यातक मेसर्स बिस्माक जीएमबीएच ने ईरान की उत्पादक मेसर्स कावेह फ्लोट ग्लास कंपनी द्वारा निर्मित संबद्ध वस्तुओं के निर्यात किए हैं। इन दोनों कंपनियों ने निर्यातक की प्रश्नावली के उत्तर दिए हैं। निर्यातक की प्रश्नावली के उत्तर के अनुसार जांच अवधि के दौरान मेसर्स कावेह फ्लोट ग्लास कंपनी ने बिस्माक जीएमबीएच के माध्यम से भारत को संबद्ध वस्तुओं के 20,234 मी.टन के निर्यात किए हैं। प्राधिकारी द्वारा यह नोट किया जाता है कि कावेह तैयार संबद्ध वस्तुओं को समुद्री जहाज से सीधे भारत को भेजती है और बिस्माक जीएमबीएच के माध्यम से उनकी केवल वाणिज्यिक बीजक बनाई जाती हैं। अंतर्देशीय भाड़े, समुद्री भाड़े, क्लीयरेंस और हैंडलिंग प्रभारों पर होने वाले समंजन के दावे किए गए हैं और आवश्यक जांच करने के बाद उन्हें स्वीकार कर लिया गया है। प्राधिकारी ने निर्यात कीमत का निर्धारण करने के लिए एसजीएंडए और व्यापारी के लाभ का भी समंजन किया है। कावेह के लिए प्रस्तावित निर्यात कीमत \*\*\* अमरीकी डालर प्रति मी.टन निर्धारित की गई है।

#### **मेसर्स अर्दाकन फ्लोट ग्लास कंपनी, ईरान के मामले में सामान्य मूल्य**

36. उत्पादक द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रश्नावली के उत्तरों की जांच कर ली गई है और जांच की कार्यवाई के दौरान उनमें पाई गई कुछ कमियों के बारे में उत्पादक को बताया गया है। इसके अतिरिक्त प्रारंभ में उन्होंने अपने दस्तावेजों की जांच करने से मनाही की थी। लेकिन दूसरी सार्वजनिक सुनवाई के दौरान उनके प्रतिनिधियों ने यह निवेदन किया था कि वे जांच के लिए इच्छुक हैं और प्राधिकारी ने उनके व्यवसाय के आंकड़ों/सूचना की जांच की है। तथापि, जांच के दौर के दौरान वे अपने द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना के समर्थन में संतोषजनक साक्ष्य प्रस्तुत करने में विफल रहे हैं। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए सामान्य मूल्य के बारे में उनकी सूचना को विश्वसनीय नहीं माना जा सकता है और इसलिए प्राधिकारी ने करार के अनुच्छेद 6.8 के साथ पठित पाटन-रोधी नियमावली के नियम 6 (8) के अनुसार उपलब्ध श्रेष्ठतम तथ्यों के आधार पर संरचित किया है। इस प्रकार इस उत्पादक के लिए प्रस्तावित संरचित सामान्य मूल्य \*\*\*अमरीकी डालर प्रति मी.टन आकलित किया जाता है।

#### **मेसर्स अर्दाकन फ्लोट ग्लास कंपनी, ईरान और मेसर्स सिंबल व्हाइट इंटरनेशनल एलएलसी, ओमन के मामले में निर्यात कीमत**

37. निर्यातक की प्रश्नावली के उत्तर (ईक्यूआर) के अनुसार ओमन से निर्यातक, मेसर्स सिंबल व्हाइट इंटरनेशनल एलएलसी ने ईरान की उत्पादक मेसर्स अर्दाकन फ्लोट ग्लास कंपनी द्वारा निर्मित संबद्ध वस्तुओं के निर्यात किए हैं। इन दोनों कंपनियों ने निर्यातक की प्रश्नावली के उत्तर दिए हैं। निर्यातक की प्रश्नावली के उत्तर के अनुसार जांच अवधि के दौरान मेसर्स अर्दाकन फ्लोट ग्लास कंपनी ने मेसर्स सिंबल व्हाइट इंटरनेशनल एलएलसी के माध्यम से भारत को संबद्ध वस्तुओं के 49,902 मी.टन के निर्यात किए हैं। यह नोट किया जाता है कि मेसर्स अर्दाकन फ्लोट ग्लास कंपनी तैयार संबद्ध वस्तुओं को समुद्री जहाज से सीधे भारत को भेजती है और बिस्माक जीएमबीएच के माध्यम से उनकी केवल वाणिज्यिक बीजक बनाई जाती हैं।

अंतर्देशीय भाड़े, समुद्री भाड़े, क्लीयरेंस और हैंडलिंग प्रभारों पर होने वाले समंजन के दावे किए गए हैं और आवश्यक जांच करने के बाद उन्हें स्वीकार कर लिया गया है। प्राधिकारी ने निर्यात कीमत का निर्धारण करने के लिए एसजीएंडए और व्यापारी के लाभ का भी समंजन किया है। अर्दाकिन के लिए प्रस्तावित निर्यात कीमत \*\*\* अमरीकी डालर प्रति मी.टन निर्धारित की गई है।

#### ईरान से अन्य उत्पादकों और निर्यातकों के मामले में सामान्य मूल्य

38. ईरान से अन्य निर्यातकों द्वारा इस जांच में असहयोग को ध्यान में रखते हुए ईरान से अन्य उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण, पाटन-रोधी नियमावली 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर किया गया है और यह \*\*\* अमरीकी डालर प्रति मी.टन बनता है।

#### ईरान से अन्य उत्पादकों और निर्यातकों के मामले में निर्यात कीमत

39. ईरान से अन्य निर्यातकों द्वारा इस जांच में असहयोग को ध्यान में रखते हुए ईरान से अन्य उत्पादकों/निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत का निर्धारण, पाटन-रोधी नियमावली 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर किया गया है। इस प्रकार से निर्धारित की गई प्रस्तावित निबल निर्यात कीमत \*\*\* अमरीकी डालर प्रति मी.टन बनती है।

#### पाटन मार्जिन

40. संबद्ध वस्तुओं के लिए उपरोक्त अनुसार निर्धारित सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत को ध्यान में रखते हुए समग्र रूप से संबद्ध वस्तुओं के लिए निर्धारित किया गया पाटन मार्जिन निम्नानुसार है:-

देश	निर्यातक/उत्पादक	सामान्य मूल्य	निबल निर्यात कीमत	पाटन मार्जिन		
		(अम.डालर/ मी.टन)	(अम.डालर/ मी.टन)	(अम.डालर/ मी.टन)	%	सीमा
ईरान	मेसर्ज अर्दाकिन फ्लोट ग्लास कंपनी, ईरान और मेसर्ज सिंबल व्हाइट इंटरनेशनल एलएलसी, ओमन (निर्यातक)	***	***	***	***	25-35
ईरान	मेसर्ज कावेह फ्लोट ग्लास कंपनी, ईरान (उत्पादक) और मेसर्ज बिस्माक जीएमबीएच, जर्मनी (निर्यातक)	***	***	***	***	(10)-5
ईरान	अन्य	***	***	***	***	25-35

#### छ. क्षति और कारणात्मक संबंध

##### उत्पादकों/निर्यातकों/आयातकों/अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदन

41. वर्तमान जांच की कार्रवाई के दौरान हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए तथा प्राधिकारी द्वारा प्रासंगिक पाए गए निवेदन निम्नानुसार हैं:-

- (1) क्षति अवधि के दौरान आयात कीमतों में वृद्धि हुई है और इसलिए याचिकादाताओं का यह दावा कोई महत्ता नहीं रखता है कि पाटित आयात उनकी लाभ प्रदता को प्रभावित कर रहे हैं और वे अपनी बिक्री कीमत को बढ़ाने में अक्षम हैं और इसलिए उन्हें मात्रा संबंधी कोई घाटा नहीं हुआ है।
- (2) ईरान से आयात नगण्य हैं और उनके कारण घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है।
- (3) यह स्वीकार किया गया है कि उत्पादन, उत्पादन क्षमता, बिक्रियों, रोजगार, उत्पादकता (प्रति दिन के साथ-साथ प्रति कर्मचारी) आदि में वृद्धि हुई है। इस प्रकार घरेलू उद्योग द्वारा किया गया दावा कोई महत्ता नहीं रखता है।
- (4) याचिकादाताओं को यदि कोई आरोपित क्षति हुई है, तो उसका वास्तविक कारण संबद्ध वस्तुओं का पाटन नहीं बल्कि अन्य कारण हैं, जैसे कि अन्य उत्पादकों के साथ पारस्परिक प्रतिस्पर्द्धा का होना और बिना सोचे-समझे निवेश करना है।

#### **घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निवेदन**

42. वर्तमान जांच की कार्यवाई के दौरान क्षति के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए तथा प्राधिकारी द्वारा प्रासंगिक पाए गए निवेदन निम्नानुसार हैं:-

- (1) अनेक वर्षों से विचाराधीन उत्पाद के आयातों ने अत्यधिक वृद्धि दर्शायी है और जांच अवधि में उनमें और अधिक वृद्धि हुई है।
- (2) भारत में उत्पादन और खपत के संबंध में आयातों में वृद्धि हुई है।
- (3) मांग में ईरान के बाजार का हिस्सा अत्यधिक है। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के बाजार के हिस्से में गिरावट आई है। इसका मुख्य कारण ईरान से अत्यधिक आयात का होना है।
- (4) विदेशी उत्पादकों द्वारा कीमतों को घटाने से भारतीय उत्पादकों के पास केवल एक विकल्प उपलब्ध है, या तो वे अपनी कीमतों को आयात कीमतों में हुए परिवर्तन के अनुसार पुनः तय करें अथवा आर्डरों को गंवाएं और इस प्रकार अपने बाजार के हिस्से को घटाएं।
- (5) घरेलू उद्योग की कीमतें, घरेलू बाजार में आयातों के द्वारा पेश की जा रही कीमतों के प्रभाव को दर्शाती हैं।
- (6) आयातित वस्तुएं घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती कर रही हैं। विचाराधीन उत्पाद के संबंध में कीमत में ऐसी कटौती बहुत अधिक है।
- (7) आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में घरेलू उद्योग की मालसूचियों में वृद्धि हुई है।
- (8) ईरान से पाटित आयातों के कारण जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की लाभप्रदता विकट रूप से प्रभावित हुई है। क्षति की जांच अवधि के दौरान पाटित कीमतों पर बड़ी हुई आयात मात्रा के फलस्वरूप घरेलू उद्योग को अत्यधिक क्षति हुई है। इसके अतिरिक्त इससे यह स्पष्ट पता चलता है कि ईरान से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति हुई है, जिसके कारण वह क्षति की जांच की समग्र अवधि के दौरान अपनी कीमतों को लाभकारी स्तर तक बढ़ाने से बाधित हुआ है। इस प्रकार पाटित आयातों ने न केवल उनकी लाभप्रदता को विकट रूप से प्रभावित किया है, बल्कि उन्हें निवेश पर प्राप्त होने वाले वैध लाभ प्राप्त करने में भी बहुत हद तक अडचन डाली है।
- (9) संबद्ध देशों से अलाभप्रद कीमतों पर आयात की मात्रा में अत्यधिक वृद्धि होने के कारण घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में गिरावट आई थी।
- (10) बिक्री कीमत में वृद्धि, उत्पादन की लागत में हुई वृद्धि से कम थी और इस प्रकार पाटित आयात घरेलू उद्योग पर कीमत ह्रास के प्रभाव डाल रहे हैं।

- (11) ईरान से संबद्ध वस्तुओं के पाटन के कारण घरेलू उद्योग को आर्थिक क्षति हुई है। इसके अतिरिक्त यदि वर्तमान स्थिति ज्यों ही बनी रहती है, तो उससे घरेलू उद्योग को निरंतर ऐसी क्षति होते रहने का खतरा है।

### प्राधिकारी की जांच

43. डब्ल्यूटीओ करार के अनुच्छेद 3.1 और नियमावली के अनुबंध-II में इन दोनों की तथ्यपरक जांच की व्यवस्था है, (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान उत्पाद के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों का प्रभाव; और (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों का परिणामी प्रभाव। पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप से अथवा भारत में उत्पादन या खपत की दृष्टि से भारी वृद्धि हुई है। पाटित आयातों के कीमत प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पादों की कीमतों की तुलना में भारी कीमत कटौती की गई है अथवा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों में महत्वपूर्ण स्तर तक कमी करना है या ऐसा कीमत वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा काफी मात्रा में बढ़ गई होती।

44. जहां तक घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध- II के पैरा (IV) में निम्नानुसार उल्लेख है:

*"संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर आय या क्षमता उपयोग में स्वाभाविक और संभावित गिरावट सहित उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले सभी संगत आर्थिक कारकों और संकेतकों, घरेलू कीमतों, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभाव, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता को प्रभावित करने वाले कारकों का मूल्यांकन शामिल होगा।"*

45. प्राधिकारी द्वारा नीचे किया गया क्षति विश्लेषण, हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए विभिन्न निवेदनों का समाधान करता है। भारत में घरेलू उद्योग पर आयात के प्रभाव की जांच करने के लिए प्राधिकारी ने पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध-2 (4) में उल्लिखित प्रावधान के अनुसार उद्योग की स्थिति को प्रभावित करने वाले उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्रियों की मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निबल बिक्री वसूली, पाटन का परिमाण और मार्जिन आदि जैसे सूचकों पर विचार किया है।

46. प्राधिकारी का पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध-3 में उल्लिखित प्रावधान और डीजीएडी की प्रतिष्ठित पद्धतियों के अनुसार क्षति रहित कीमत का परिकलन करने का प्रस्ताव है।

### ज. पाटित आयातों की मात्रा के प्रभाव

#### आयात की मात्रा और बाजार का हिस्सा

47. पाटित आयातों की मात्रा के संबंध में प्राधिकारी को इस पर विचार करने की आवश्यकता है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप से अथवा भारत में उत्पादन अथवा खपत के संबंध में अत्यधिक वृद्धि हुई है। क्षति का विश्लेषण करने के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने डीजीसीआईएंडएस से प्राप्त किए गए आयात के आंकड़ों पर विश्वास किया है। इसके अतिरिक्त प्राधिकारी ने मेसर्स कावेल फ्लोट ग्लास कंपनी, ईरान के गैर-पाटित आयातों की मात्रा को ईरान से आयातों की कुल मात्रा में से हटा दिया है क्योंकि वे पाटित आयात नहीं हैं। ईरान से संबद्ध वस्तुओं के आयातों की मात्रा का विश्लेषण किया गया है जो कि निम्नानुसार है:-

विवरण	यूनिट	2011-12	2012-13	2013-14	जांच अवधि	जांच अवधि (वार्षिकी कृत)
ईरान	मी.टन	0	574	3067	67802	45201
ईरान	प्रवृत्ति	0	100	534	11803	7869
ईरान के गैर-पाटित आयात	मी.टन				20234	13489

विवरण	यूनिट	2011-12	2012-13	2013-14	जांच अवधि	जांच अवधि (वार्षिकी कृत)
ईरान के पाटित आयात	मी.टन	0	574	3067	47568	31712
ईरान के पाटित आयात	प्रवृत्ति		100	534	8281	5521
अन्य देश	मी.टन	24268	129878	49755	166005	110670
अन्य देश	प्रवृत्ति	100	535	205	684	456
आयातों की कुल मात्रा	मी.टन	24268	130452	52822	233808	155872
आयातों की कुल मात्रा	प्रवृत्ति	100	538	218	963	642
मांग	मी.टन	749925	861209	843219	1381231	932853
मांग	प्रवृत्ति	100	115	112	184	124
<b>आयातों में बाजार का हिस्सा</b>						
ईरान के पाटित आयात	%	0.00%	0.44%	5.81%	20.00%	20.00%
ईरान के गैर- पाटित आयात	%				9.00%	9.00%
अन्य देश	%	100.00%	99.56%	94.19%	71.00%	71.00%
<b>मांग में बाजार का हिस्सा</b>						
ईरान के गैर- पाटित आयात	%				1.46%	1.46%
ईरान के पाटित आयात	%	0.00%	0.07%	0.36%	3.46%	3.46%
अन्य देश	%	3.24%	15.08%	5.90%	12.02%	11.86%
कुल घरेलू विक्रियां	%	96.76%	84.85%	93.74%	83.07%	83.29%

48. उपरोक्त तालिका से यह नोट किया जाता है कि वर्ष 2012-13 और 2013-14 की तुलना में जांच अवधि के दौरान ईरान से संबद्ध वस्तुओं के पाटित आयातों में समग्र रूप से वृद्धि हुई है। यह नोट करना भी महत्वपूर्ण है कि आधार वर्ष में ईरान से आयात शून्य थे और इसलिए क्षति अवधि के दौरान आयातों में ऐसी भारी वृद्धि होने के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई है।

49. समग्र आयातों के संबंध में ईरान से बाजार का हिस्सा भी वर्ष 2012-13 में 0.44% से बढ़ कर जांच अवधि के दौरान 20 % हो गया है। इसी प्रकार उसी अवधि में कुल मांग में ईरान का बाजार का हिस्सा भी 0.07% से बढ़ 3.46% हो गया है। इस प्रकार यह देखा जा सकता है कि समग्र रूप के साथ-साथ देश में समग्र मांग के संबंध में ईरान से पाटित आयातों में अत्यधिक वृद्धि हुई है।

#### **घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों की कीमत के प्रभाव**

50. कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी को इस तथ्य पर विचार करना अपेक्षित है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा कीमत में भारी कटौती की गई है अथवा क्या ऐसे आयातों से कीमत में पर्याप्त स्तर तक गिरावट आई है अथवा कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रूकावट आई है, जिसमें अन्यथा काफी हद तक वृद्धि हो गई होती। ईरान से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों पर प्रभाव की जांच, कीमत में कटौती होने, कम कीमत पर बिक्री होने कीमत ह्रास और कीमत न्यूनीकरण, यदि कोई है, के संदर्भ में की गई है। इस प्रकार के



विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग के उत्पादन की लागत, निबल बिक्री वसूली (एनएसआर) और क्षति रहित कीमत (एनआईपी) की तुलना ईरान से आयातों की पहुंच लागत के साथ की गई है।

### कीमत कटौती

51. यह निर्धारित करने के लिए कि क्या आयात, बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती कर रहे हैं, प्राधिकारी ने आयातों की पहुंच कीमत की तुलना घरेलू उद्योग की निबल बिक्री वसूली के साथ की है।

ईरान		2011-12	2012-13	2013-14	जांच अवधि	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
पाटित आयातों की पहुंच कीमत	यूनिट	0	10825	16321	17372	17372
निबल बिक्री वसूली	रुपए/ मी.टन	***	***	***	***	***
निबल बिक्री वसूली - प्रवृत्ति	प्रवृत्ति	100	116	120	135	135
कीमत में कटौती	रुपए/ मी.टन	***	***	***	***	***
कीमत में कटौती (%)	%	***	***	***	***	***
कीमत में कटौती (%)	सीमा %	0	75-85	20-30	30-40	30-40

### सहयोगी निर्यातकों की कीमत में कटौती

52. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तुओं का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम था, जिससे पता चलता है कि जांच अवधि के दौरान ईरान से आयात कीमत में अत्यधिक कटौती कर रहे हैं। प्राधिकारी घरेलू उद्योग के इस तर्क को उपयुक्त मानते हैं कि ईरान से कम कीमत के आयातों के दबाव के कारण घरेलू उद्योग अपनी बिक्री कीमत को नहीं बढ़ा सका है, जो कि जांच अवधि में मात्रात्मक रूप में बहुत अधिक बढ़ गए थे।

जांच अवधि		कावेह	अर्दकान
पहुंच कीमत	रुपए/मी.टन	***	***
बिक्री कीमत	रुपए/मी.टन	***	***
कीमत में कटौती	रुपए/मी.टन	***	***
कीमत में कटौती	%	***	***
कीमत में कटौती (%)	सीमा	15-25	15-25

### कम कीमत पर बिक्री

53. प्राधिकारी ने ईरान से पाटित आयातों के कारण कीमत में कटौती से घरेलू उद्योग को हुई क्षति की भी जांच की है, जो कि निम्नानुसार है:-

विवरण	यूनिट	ईरान
एनआईपी	रुपए/मी.टन	***
आयातों की पहुंच कीमत	रुपए/मी.टन	***

विवरण	यूनिट	ईरान
कम कीमत पर बिक्री	रुपए/मी.टन	***
कम कीमत पर बिक्री	%	***
कम कीमत पर बिक्री	सीमा	40-50

#### सहयोगी निर्यातकों की कम कीमत पर बिक्री

54. उपरोक्त तालिका से यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों के कारण अत्यधिक कम कीमत पर बिक्री करने के कारण क्षति हुई है।

विवरण	यूनिट	कावेह	अर्दकान
एनआईपी	रुपए/मी.टन	***	***
आयातों की पहुंच कीमत	रुपए/मी.टन	***	***
कम कीमत पर बिक्री	रुपए/मी.टन	***	***
कम कीमत पर बिक्री	%	***	***
कम कीमत पर बिक्री	सीमा	25-35	25-35

#### कीमत ह्रास और कीमत न्यूनीकरण

55. यह निर्धारित करने के लिए कि क्या आयात, घरेलू उद्योग की कीमतों का ह्रास अथवा न्यूनीकरण कर रहे हैं और क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में अत्यधिक सीमा तक ह्रास हुआ है अथवा कीमत में वृद्धि होनी रुकी है, जो कि अन्यथा अत्यधिक सीमा तक हो गई होती, प्राधिकारी ने क्षति अवधि के दौरान लागतों और कीमतों में हुए परिवर्तनों पर विचार किया है। नीचे तालिका में वास्तविक स्थिति दर्शाई गई है:-

विवरण	यूनिट	2011-12	2012-13	2013-14	जांच अवधि	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
ईरान से पाटित आयातों का पहुंच मूल्य	रुपए/मी.टन	0	10825	16321	17372	17372
सूचक	सूचीबद्ध		100	151	160	160
बिक्रियों की लागत	रुपए/मी.टन	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	109	117	115	115
बिक्री कीमत	रुपए/मी.टन	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	116	120	135	135

56. चूंकि वर्ष 2011-2012 में ईरान से कोई निर्यात नहीं हुआ था, वर्ष 2012-2013 की स्थिति के साथ तुलना करना अधिक उपयुक्त होगा। उपरोक्त तालिका से यह भी नोट किया जाता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान बिक्रियों की लागत के साथ-साथ कीमतों दोनों में वृद्धि हुई है। तथापि, यह भी नोट किया जाता है कि समग्र क्षति जांच अवधि के दौरान पहुंच मूल्य, संबद्ध वस्तुओं की उत्पादन की लागत और बिक्री कीमत से अत्यधिक कम बना हुआ था, जिसने घरेलू

उद्योग को संबद्ध वस्तुओं की बिक्री कीमत बढ़ाने नहीं दी है। तदनुसार यह प्रतीत होता है कि ईरान से संबद्ध वस्तुओं के पाटित आयातों ने घरेलू उद्योग की कीमतों में ह्रास किया है।

### झ. घरेलू उद्योग के आर्थिक प्राचल

57. पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध-2 में ऐसा अपेक्षित है कि क्षति का निर्धारण करने में ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव की सार्थक जांच करना निहित होगा। ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव के संबंध में पाटन-रोधी नियमावली में आगे यह भी प्रावधान निहित है कि घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव की जांच करने में सभी संबद्ध आर्थिक कारकों का सार्थक और निष्पक्ष मूल्यांकन करने के साथ-साथ उद्योग की स्थिति को प्रभावित करने वाले सूचकों को भी शामिल किया जाना चाहिए, जिनमें बिक्रियों, लाभ, उत्पादन, बाजार के हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर प्रतिलाभ अथवा क्षमता उपयोग, घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक, पाटन के मार्जिन का परिमाण, नकदी प्रवाह, मालसूचियां, रोजगार, वेतन, संवृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता जैसे वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभाव भी शामिल होने चाहिए।

58. घरेलू उद्योग से संबंधित क्षति के विभिन्न प्राचलों का उल्लेख नीचे किया गया है।

(1) बाजार का हिस्सा: घरेलू बिक्रियों और घरेलू उद्योग के बाजार के हिस्से पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच की गई है, जो कि निम्नानुसार है:-

विवरण	यूनिट	2011-12	2012-13	2013-14	जांच अवधि	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
घरेलू उद्योग की बिक्रियां	मी.टन	486011	476297	558505	952692	635128
घरेलू उद्योग की बिक्रियां	सूचीबद्ध	100	98	115	196	131
घरेलू उत्पादकों की बिक्रियां	मी.टन	239646	254459	231892	194731	141853
घरेलू उत्पादकों की बिक्रियां	सूचीबद्ध	100	106	97	81	59
कुल घरेलू बिक्रियां	मी.टन	725657	730756	790397	1147423	776981
कुल घरेलू बिक्रियां	सूचीबद्ध	100	101	109	158	107
ईरान से पाटित आयात	मी.टन	0	574	3067	47568	31712
अन्य देशों से आयात	मी.टन	24268	129878	49755	166005	110670
कुल आयात	मी.टन	24268	130452	52822	233808	155872
कुल मांग	मी.टन	749925	861209	843219	1381231	932853
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	115	112	184	124
मांग में घरेलू बिक्रियों का बाजार का हिस्सा	%	96.76%	84.85%	93.74%	83.07%	83.29%
मांग में ईरान से पाटित आयातों का बाजार का हिस्सा	%	0.00%	0.07%	0.36%	3.44%	3.40%
मांग में अन्य देशों का बाजार का हिस्सा	%	3.24%	15.08%	5.90%	12.02%	11.86%
मांग में ईरान से गैर-पाटित आयातों का बाजार का हिस्सा	%				1.46%	1.45%

जैसा कि पहले ऊपर उल्लेख किया गया है, क्षति की समस्त जांच अवधि के दौरान ईरान से संबद्ध वस्तुओं के आयातों में समग्र रूप से वृद्धि हुई है। मूल वर्ष 2011-12 में आयात शून्य से बढ़ कर जांच अवधि के दौरान 47568 मी.टन (31712 वार्षिकीकृत) हो गए जिससे ईरान से आयातों की मात्रा में भारी वृद्धि होने का पता चलता है। यह भी नोट किया जा सकता है कि सभी विगत वर्षों की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू कीमतों के बाजार के हिस्से में गिरावट आई है, जबकि उसकी अवधि के दौरान ईरान से आयातों के बाजार के हिस्से में भारी वृद्धि हुई है।

(2) **लाभप्रदता:** यह नोट किया जाता है कि सऊदी अरब, यूएई और पाकिस्तान के खिलाफ पाटन-रोधी शुल्क लगाए जाने के बाद घरेलू उद्योग उभरने की स्थिति में था। लेकिन ईरान से कम कीमत पर पाटित आयातों ने घरेलू उद्योग की लाभप्रदता को विकट रूप से प्रभावित किया है। यह भी देखा गया है कि बिक्री कीमत ने वृद्धि होने की प्रवृत्ति दर्शाई है, लेकिन यह घरेलू उद्योग के उत्पादन की लागत से नीचे बनी रही है, जिसके फलस्वरूप पाटित आयातों की कीमतों के समग्र प्रभाव के कारण घरेलू उद्योग का निरंतर घाटे हुए हैं।

विवरण	यूनिट	2011-12	2012-13	2013-14	जांच अवधि	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
बिक्रियों की लागत	रुपए/ मी.टन	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	107	119	115	115
बिक्री कीमत	रुपए/ मी.टन	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	102	108	135	135
लाभ/हानि	रुपए/ मी.टन	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	70	96	8	8
लाभ/हानि	लाख रुपए	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	68	110	16	11
पीवीआईटी	लाख रुपए	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	43	132	- 109	- 67

(3) **निवेश पर प्रतिलाभ:** निवेश पर प्रतिलाभ में वही प्रवृत्ति देखी गई है, जो कि लाभप्रदता में थी, जिसे नीचे तालिका में देखा जा सकता है:-

विवरण	यूनिट	2011-12	2012-13	2013-14	जांच अवधि	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
निवेश पर प्रतिलाभ	%	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	- 100	- 75	- 109	- 10	- 7

यह देखा गया है कि अन्य देशों से इनपुट पर पाटन-रोधी शुल्क लगाए जाने के बाद भी समग्र क्षति जांच अवधि में निवेश पर प्रतिलाभ नकारात्मक बना रहा है।

(4) **उत्पादन और क्षमता उपयोग:** यह देखा जा सकता है कि घरेलू उद्योग के उत्पादन में वृद्धि हुई है, जो कि मुख्यतया उत्पादन की क्षमता में वृद्धि के कारण है। देश में बढ़ती हुई मांग को ध्यान में रखते हुए उत्पादन 29% से भी अधिक बढ़ गया है। लेकिन घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग उसी स्तर पर बना हुआ है। तथापि, यह नोट किया जाता है कि बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिए घरेलू उद्योग के पास अत्यधिक क्षमता निष्क्रिय पड़ी हुई है और इसलिए घरेलू उद्योग को क्षति हुई है।

विवरण	यूनिट	2011-12	2012-13	2013-14	जांच अवधि	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
क्षमता	मी.टन	1047910	1080400	1080400	2031960	1354640
क्षमता	सूचीबद्ध	100	103	103	194	129
कुल उत्पादन	मी.टन	819328	858335	895189	1578509	1052339
कुल उत्पादन	सूचीबद्ध	100	105	109	193	128
विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन	मी.टन	527005	584789	620376	1118436	745624
विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन	सूचीबद्ध	100	111	118	212	141
क्षमता उपयोग	%	78%	79%	83%	78%	78%
क्षमता उपयोग	सूचीबद्ध	100	102	106	99	99
बिक्रियों की मात्रा						
घरेलू	मी.टन	486011	476297	558505	952692	635128
घरेलू	सूचीबद्ध	100	98	115	196	131
निर्यात	मी.टन	16269	19994	34510	45661	30441
निर्यात	सूचीबद्ध	100	123	212	281	187
कुल बिक्रियां	मी.टन	502380	496390	593129	998550	665700
कुल बिक्रियां	सूचीबद्ध	100	99	118	199	133

(5) **बिक्रियों की मात्रा:** उपरोक्त तालिका में निर्दिष्ट बिक्रियों की मात्रा से यह नोट किया जाता है कि समग्र क्षति जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्रियों में वृद्धि हुई है। बिक्रियों में वृद्धि होने से बाजार के आकार में वृद्धि होने का पता चलता है। तथापि, प्राधिकारी नोट करते हैं कि हालांकि घरेलू उद्योग अपनी बिक्रियों की मात्रा बढ़ाने में सक्षम रहा है, फिर भी उसे कीमत के क्षेत्र में नुकसान होने के कारण उसे घाटे हुए हैं।

(6) **मालसूचियां:** संबद्ध वस्तुओं की मालसूची से संबंधित आंकड़े नीचे तालिका में दर्शाए गए हैं:-

विवरण	यूनिट	2011-12	2012-13	2013-14	जांच अवधि	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
मालसूची	मी.टन	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	109	60	77	77

उपरोक्त तालिका से यह नोट किया जाता है कि वर्ष 2013-14 की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की मालसूची में वृद्धि हुई है, यह वह अवधि है, जिसमें ईरान से भारी मात्रा में भारत में आयात होने शुरू हुए थे। जांच अवधि में मालसूची में वृद्धि ने घरेलू उद्योग के वित्तीय कार्य-निष्पादन में बाधा उत्पन्न की है।

## (7) रोजगार और वेतन: रोजगार और वेतन से संबंधित स्थिति निम्नानुसार है:-

	यूनिट	2011-12	2012-13	2013-14	जांच अवधि	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
कर्मचारी	संख्या	1771	1757	1812	1828	1828
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	99	102	103	103
वेतन/कर्मचारी	रुपए	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	196	218	363	242

(8) उत्पादकता: नीचे दी गई तालिका में यह देखा जा सकता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में उत्पादन प्रति कर्मचारी के रूप में उत्पादकता में वृद्धि हुई है। उत्पादकता में वृद्धि होने के बावजूद जांच अवधि में घरेलू उद्योग का कार्य-निष्पादन निरंतर नकारात्मक बना हुआ है। तदनुसार क्षति के लिए उत्पादकता को एक जिम्मेदार कारक नहीं माना जा सकता है।

	यूनिट	2011-12	2012-13	2013-14	जांच अवधि	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
उत्पादन (मी.टन)	मी.टन	527005	584789	620376	1118436	745624
कर्मचारी	संख्या	1771	1757	1812	1828	1828
उत्पादन/कर्मचारी	मी.टन/ संख्या	298	333	342	612	408
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	112	115	206	137

(9) पाटन का परिमाण: पाटन का परिमाण एक कुछ हद तक ऐसा संकेतक है, जिससे यह पता चलता है कि पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है और ईरान के खिलाफ निर्धारित किया गया पाटन मार्जिन, न्यूनतम सीमा से ऊपर और अत्यधिक है। प्राधिकारी ने पाटन मार्जिन का निर्धारण, (0) अमरीकी डालर से ले कर \*\*\* अमरीकी डालर प्रति मी.टन किया है, जो कि बहुत अधिक है।

(10) पूंजी जुटाने की क्षमता: ईरान से पाटित आयात होने के कारण क्षेत्र में भावी निवेश बाधित हुआ है। नकारात्मक लाभप्रदता और निवेश पर प्रतिलाभ के साथ घटे हुए नकदी प्रवाह से क्षेत्र के लिए निवेश जुटाने की घरेलू उद्योग की क्षमता का पता चलता है, जो कि संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण गंभीर रूप से प्रभावित हुई है।

(11) घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक: जांच करने से पता चलता है कि भारत में संबद्ध वस्तुओं की अच्छी मांग है। ईरान से कम कीमत के पाटित आयात घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों को प्रभावित कर रहे हैं। यह भी नोट किया जाता है कि ईरान से संबद्ध वस्तुओं का पहुंच मूल्य, घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत और क्षति रहित कीमत से अत्यधिक कम है जिसके कारण भारतीय बाजार में कीमतों अत्यधिक कटौती और कम कीमत पर बिक्री करनी हो रही है। ईरान और ऐसे देशों जिन पर पहले से ही पाटन-रोधी शुल्क लग रहे हैं, से भिन्न अन्य देशों से विचाराधीन उत्पाद के आयात घरेलू उद्योग को क्षति नहीं पहुंचा रहे हैं अथवा उनके आयात गैर-पाटित कीमतों पर होते हैं क्योंकि इन देशों द्वारा पेश की जा रही कीमतें बहुत अधिक हैं। उत्पाद की मांग बढ़ने की प्रवृत्ति दर्शा रही है और इसलिए यह घरेलू उद्योग द्वारा सामना किए जा रहे कीमत ह्रास और कीमत न्यूनीकरण के लिए जिम्मेदार कारक नहीं हो सकता है। इस प्रकार यह देखा जा सकता है कि ईरान से पाटित वस्तुएं घरेलू उद्योग की कीमत ह्रास और कीमत न्यूनीकरण के लिए जिम्मेदार हैं।

(12) **संवृद्धि:** आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में बिक्रियों और उत्पादन के रूप में घरेलू उद्योग की सकारात्मक संवृद्धि थी। लेकिन मांग में अत्यधिक वृद्धि होने के बावजूद भी आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में लाभ, नकदी लाभ के साथ-साथ निवेश पर प्रतिलाभ नकारात्मक बना रहा है। घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि क्षमता में वृद्धि होने से उसको लाभ में वृद्धि, सुगम नकदी प्रवाह और निवेश पर प्रतिलाभ में वृद्धि होने की आशा थी। लेकिन घरेलू उद्योग ईरान से पाटित आयातों के दबाव के कारण उन्हें प्राप्त करने में सक्षम नहीं हो सका है।

#### ज. आर्थिक क्षति पर निष्कर्ष

59. संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के आयातों की मात्रा और कीमत प्रभाव की जांच करने के बाद प्राधिकारी का यह निष्कर्ष है कि समग्र जांच अवधि में ईरान से संबद्ध वस्तुओं के पाटित आयातों में समग्र रूप से और साथ ही भारत में संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन और मांग के संबंध में अत्यधिक वृद्धि हुई है। ईरान से संबद्ध वस्तुओं के आयातों के कारण कीमत प्रभाव के संबंध में यह नोट किया जाता है कि ईरान से संबद्ध वस्तुओं के आयात घरेलू उद्योग की कीमतों में अत्यधिक कटौती कर रहे हैं। घरेलू उद्योग को ईरान से विचाराधीन उत्पाद के आयातों के कारण कीमत में ह्रास होने का भी नुकसान उठाना पड़ा है क्योंकि क्षति अवधि में संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन की लागत में हुई वृद्धि की तुलना में संबद्ध वस्तुओं की बिक्री कीमत में वृद्धि नहीं हुई है। पहुंच मूल्य की तुलना घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत के साथ करने से भी अत्यधिक कम कीमत पर बिक्री होने का पता चलता है। घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के परिणामी प्रभाव के संबंध में यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि हालांकि उत्पादन, क्षमता उपयोग और घरेलू बिक्रियों के क्षेत्र में घरेलू उद्योग के कार्य-निष्पादन में मामूली सुधार दृष्टिगत हुआ है, लेकिन लाभ, निवेश पर प्रतिलाभ और माल सूचियों के संबंध में उसका कार्य-निष्पादन नकारात्मक बना हुआ है। इस प्रकार प्राधिकारी का यह निष्कर्ष है कि जांच अवधि के दौरान ईरान से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को आर्थिक क्षति हुई है।

#### ट. अन्य ज्ञात कारक और कारणात्मक संबंध

60. आर्थिक क्षति, घरेलू उद्योग की कीमतों पर पाटित आयातों की मात्रा और कीमत प्रभाव की जांच करने के बाद प्राधिकारी द्वारा भारतीय नियमावली और पाटन-रोधी करार के अंतर्गत कीमत में कटौती, कम कीमत पर बिक्री और कीमत ह्रास और कीमत न्यूनीकरण के प्रभाव के अन्य ऐसे सूचक प्राचलों की जांच यह देखने के लिए की गई है कि क्या पाटित आयातों से भिन्न कोई अन्य कारक भी है, जो कि घरेलू उद्योग की क्षति के लिए जिम्मेदार हो।

#### (क) तृतीय देशों से आयातों की मात्रा और कीमतें

61. ईरान से भिन्न अन्य देशों से विचाराधीन उत्पाद के आयात अधिक कीमतों पर होते हैं। नीचे तालिका से यह स्पष्ट होता है कि ऐसे देशों जिन पर पहले से ही पाटन-रोधी शुल्क लगता है, के साथ अन्य देशों से आयात कीमतें, ईरान से आयात कीमत से बहुत अधिक थीं। यह भी नोट किया जाता है कि इजिप्ट से 3% से भी अधिक आयात हुए हैं। लेकिन यह पाया गया है कि ऐसे निर्यात अपेक्षाकृत अधिक और गैर-पाटित कीमतों पर हो रहे हैं।

विवरण	यूनिट	2011-12	2012-13	2013-14	जांच अवधि	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
आयात की मात्रा						
ईरान से पाटित आयात	मी.टन	0	574	3067	47568	31712
ईरान से गैर-पाटित आयात	मी.टन	0	0	0	20234	13489
चीन	मी.टन	4507	8434	557	14700	9800
पाकिस्तान	मी.टन		4922	1249	13312	8875
सऊदी अरब	मी.टन	7281	80246	39403	90773	60515

यूएई	मी.टन	8139	32425	8375	25426	16951
ईजिप्ट	मी.टन	2536	0	22	13221	8814
अन्य देश	मी.टन	1805	3851	149	8574	5716
कुल आयात	मी.टन	24268	130452	52822	233808	155872
- से आयात की मात्रा में हिस्सा	मी.टन					
ईरान से पाटित आयात		0%	0%	6%	20%	20%
ईरान से गैर-पाटित आयात		0%	0%	0%	9%	9%
चीन	%	19%	6%	1%	6%	6%
पाकिस्तान	%	0%	4%	2%	6%	6%
सऊदी अरब	%	30%	62%	75%	39%	39%
यूएई	%	34%	25%	16%	11%	11%
ईजिप्ट	%	10%	0%	0%	6%	6%
अन्य देश	%	7%	3%	0%	4%	4%
आयात कीमत (सीआईएफ मूल्य प्रति मी.टन)	%					
ईरान से पाटित आयात		0	9717	14650	15513	15513
ईरान से गैर-पाटित आयात					17217	17217
चीन	रुपए/मी.टन	15705	18115	13611	19957	19957
पाकिस्तान	रुपए/मी.टन	0	12536	14140	16446	16446
सऊदी अरब	रुपए/मी.टन	11287	11752	14092	16283	16283
यूएई	रुपए/मी.टन	13579	12802	15630	17955	17955
ईजिप्ट	रुपए/मी.टन	13954	0	21583	19020	19020
अन्य देश	रुपए/मी.टन	23437	21644	51173	22555	22555

**(ख) मांग में संकुचन और खपत के पैटर्न में परिवर्तन**

62. समग्र क्षति अवधि के दौरान संबद्ध उत्पाद की मांग में निरंतर वृद्धि हुई है। इसलिए मांग में गिरावट आना घरेलू उद्योग की क्षति का संभावित कारण नहीं है।



**(ग) प्रोद्योगिकी में विकास**

63. संबद्ध उत्पाद की प्रोद्योगिकी में किसी प्रकार का कोई अंतर नहीं हुआ है। इस प्रकार प्रोद्योगिकी में विकास भी घरेलू उद्योग की क्षति का कारका नहीं हो सकता है।

**(घ) प्रतिबंधित व्यापारिक पद्धतियां तथा विदेशी और घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा**

64. ऐसी कोई प्रतिबंधित व्यापारिक पद्धति नहीं है जिसके कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई हो क्योंकि देश में कच्चे माल के साथ-साथ संबद्ध वस्तुओं के आयात स्वतंत्र रूप से किए जा सकते हैं।

**(ङ) घरेलू उद्योग का कार्य-निष्पादन**

65. घरेलू उद्योग के निर्यातों में उनकी बिक्रियों का अत्यधिक अंश होता है। किसी भी स्थिति में प्राधिकारी द्वारा क्षति का विश्लेषण उनके घरेलू प्रचालनों को ध्यान में रख कर किया गया है।

**(च) घरेलू उद्योग की उत्पादकता**

66. यह नोट किया जाता है कि समग्र अवधि में उत्पादन प्रति कर्मचारी के साथ-साथ उत्पादन प्रति दिन के रूप में घरेलू उद्योग की उत्पादकता में वृद्धि हुई है।

67. इस प्रकार यह नोट किया जाता है कि सूचीबद्ध ज्ञात अन्य कारकों से ऐसा पता नहीं चलता है कि उनके कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई है। किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने ऐसा कोई भी साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है जिससे पता चलता हो कि घरेलू उद्योग को हुई आर्थिक क्षति के लिए अन्य ज्ञात कारक जिम्मेदार हैं। दूसरी ओर निम्नलिखित प्राचलों से पता चलता है कि पाटित आयातों के कारण ही घरेलू उद्योग को क्षति हुई है:-

(क) ईरान से संबद्ध वस्तुओं के आयात बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में अत्यधिक कटौती कर रहे हैं। इनके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग बढ़ती हुई लागत के समनुरूप अपनी कीमतों में वृद्धि करने में असमर्थ रहा है। वास्तव में घरेलू उद्योग अपनी लागत वसूल करने के लिए जांच अवधि में अपनी कीमतों को नहीं बढ़ा सका है। घरेलू उद्योग को हुए कीमत ह्रास और कीमत न्यूनीकरण का मुख्य कारण ईरान से संबद्ध उत्पाद के पाटित आयात होना है।

(ख) घरेलू उद्योग की घरेलू कीमतों पर दबाव पड़ने के फलस्वरूप जांच अवधि में घरेलू उद्योग को निरंतर घाटे हुए हैं और निवेश पर नकारात्मक लाभ हुआ है। कीमत बढ़ाने में असमर्थता के साथ-साथ बढ़ती हुई लागत से घरेलू उद्योग के वित्तीय कार्य-निष्पादन को भौतिक दृष्टि से क्षति हुई है।

68. इसलिए अनन्तिम रूप से यह निष्कर्ष है कि घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण आर्थिक क्षति हुई है।

**ठ. क्षति मार्जिन की मात्रा****क्षति मार्जिन**

69. जांच अवधि के दौरान क्षति मार्जिन का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित की गई क्षति रहित कीमत की तुलना ईरान से निर्यातों के पहुंच मूल्य के साथ की गई हैं। इस प्रकार से निर्धारित किया गया क्षति मार्जिन निम्नानुसार है:-

ईरान	यूनिट	मेसर्ज अर्दाकन फ्लोट ग्लास कंपनी, ईरान और मेसर्ज सिंबल व्हाइट इंटरनेशनल एलएलसी, ओमन	मेसर्ज कावेह फ्लोट ग्लास कंपनी, ईरान और मेसर्ज बिस्माक जीएमबीएच, जर्मनी	असहयोगी उत्पादक/निर्यातक
एनआईपी	रुपए/मी.टन	***	***	***
पहुंच कीमत	रुपए/मी.टन	***	***	***
कम कीमत पर बिक्री	रुपए/मी.टन	***	***	***
कम कीमत पर बिक्री	%	***	***	***
कम कीमत पर बिक्री	सीमा	25-35	25-35	30-40

### ठ. भारतीय उद्योग के हित और अन्य मुद्दे

70. प्राधिकारी इस बात को मानते हैं कि पाटन-रोधी शुल्क लगाने से भारत में उत्पाद की कीमत स्तर पर प्रभाव पड़ सकता है। तथापि, पाटन-रोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्द्धा कम नहीं होगी। इसके विपरीत पाटन-रोधी उपाय करने से पाटन की पद्धतियों द्वारा अनुचित लाभ प्राप्त करने की अनुचित प्रक्रिया समाप्त होगी, घरेलू उद्योग में होने वाली गिरावट रुकेगी तथा उपभोक्ताओं की व्यापक पसंद की संबद्ध वस्तुओं की उपलब्धता बढ़ाने में सहायता मिलेगी। पाटन-रोधी शुल्कों का प्रयोजन सामान्यतया पाटन की अनुचित व्यावहारिक पद्धतियों द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करना है, ताकि भारतीय बाजार में ऐसा खुला और उचित प्रतिस्पर्द्धा वातावरण बहाल किया जा सके, जो कि देश के सामान्य हित में हो। इसलिए पाटन-रोधी शुल्क लगाए जाने से किसी भी तरह से उपभोक्ताओं को उत्पादों की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटन-रोधी उपाय लागू करने से किसी भी तरह से ईरान से आयात प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसलिए ये उपभोक्ताओं को उत्पाद की उपलब्धता को प्रभावित नहीं करेंगे। उपभोक्ता अभी भी आपूर्ति के दो अथवा उससे अधिक स्रोतों को बनाए रख सकते हैं।

### ड. प्रकटन पश्चात विवरण पर हितबद्ध पक्षकारों के निवेदन

71. प्रकटन पश्चात विवरण पर निर्यातकों द्वारा किए गए निवेदनों का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है :

- (क) निर्दिष्ट प्राधिकारी को अर्धांकन के लिए पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए कावेह के सामान्य मूल्य को अपनाना चाहिए क्योंकि कावेह का सामान्य मूल्य निर्दिष्ट प्राधिकारी के पास उपलब्ध उत्तम तथ्यों पर आधारित है।
- (ख) वर्तमान जांच में प्रकटन विवरण में प्रकट किए गए अनिवार्य तथ्यों से यह पता नहीं चलता कि है कोई पाटन है और उससे घरेलू उद्योग को परिणामी क्षति हुई है।
- (ग) निर्दिष्ट प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-3 के अनुसार, क्षतिरहित कीमत का परिकलन नहीं किया है। घरेलू उद्योग के लिए क्षतिरहित कीमत का निर्धारण करने के लिए पाटनरोधी नियमावली में ऐसी व्यवस्था है कि प्रतिलाभ की उचित दर पर विचार किया जाना चाहिए। निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए यह उचित नहीं है कि वे प्रतिलाभ पर 22 प्रतिशत की दर स्वीकृत करें क्योंकि इसके फलस्वरूप अनुचित रूप से बहुत अधिक क्षतिरहित कीमत निर्धारित की गई है और इस प्रकार इस मामले में अत्यधिक क्षति मार्जिन निर्धारित हुआ है। इस संबंध में उन्होंने इंडियन स्पिनर्स एसोसिएशन बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी, 2004 (170) ई.एल.टी. (ट्री-डिल) के मामले में माननीय सेस्टेट के निर्णय पर विश्वास किया है जिसमें माननीय सेस्टेट ने क्षतिरहित कीमत का आकलन करने के लिए अपनाए जाने के लिए नियोजित पूंजी पर प्रतिलाभ का निर्धारण करने के वास्ते घरेलू उद्योग के प्रतिलाभ की ऐतिहासिक दर पर विचार करने के महत्व का विशेष रूप से उल्लेख किया है।
- (घ) प्रकटन विवरण में अनिवार्य तथ्यों से यह पता नहीं चलता है कि आरोपित पाटन और घरेलू उद्योग की क्षति के बीच कोई कारणात्मक संबंध है। क्षति का विश्लेषण करने की अवधि के दौरान उत्पादन, बिक्रियों, उत्पादकता और घरेलू बिक्री कीमतों, सभी में अत्यधिक सुधार हुआ है। इसके अतिरिक्त, इस मामले के तथ्यों में कोई कीमत ह्रास और कीमत न्यूनीकरण नहीं हुआ है।
- (ङ.) यदि विचाराधीन अनिवार्य तथ्य और प्रेक्षणों में किसी भी समय यदि कोई परिवर्तन हुआ है, तो विशेषकर सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए यह अनुरोध है कि जांच और टिप्पणियों के लिए पाटनरोधी नियमावली के नियम-16 के अंतर्गत प्रतिवादियों के लिए अन्य प्रकटन विवरण जारी किए जाएं।

72. घरेलू उद्योग द्वारा प्रकटन पश्चात किए गए निवेदन निम्नानुसार हैं :-

- (क) ईरान के लिए सामान्य मूल्य को इसलिए अस्वीकृत कर दिया जाना चाहिए क्योंकि विद्युत और पावर जैसे प्रमुख कच्चे माल में पर्याप्त से कम पारिश्रमिक होने के कारण विशेष बाजार स्थिति उत्पन्न हुई है। घरेलू उद्योग ने यह भी निवेदन किया है कि चूंकि ईरान के दूतावास के प्रतिनिधि ने विशेष रूप से यह निवेदन किया था कि ईरान में संबद्ध वस्तुओं के उत्पादकों को सस्ता कच्चा माल, पावर और विद्युत मिल रही है और इसलिए उनके उत्पादन की लागत भारतीय उत्पादन की लागत की तुलना में सस्ती है। इसलिए प्राधिकारी को सामान्य मूल्य के उनके दावे को स्वीकृत नहीं करना चाहिए क्योंकि उनके प्रमुख कच्चे माल और ऊर्जा की कीमतें बाजार चालित कीमतों को प्रदर्शित नहीं करती हैं।

- (ख) घरेलू उद्योग को ईरान से पाटन और क्षति पहुंचाने वाले आयातों के कारण निरंतर क्षति हो रही है और इसलिए उनका प्राधिकारी से अनुरोध है कि वे क्षति पहुंचाने वाले आयातों से घरेलू उद्योग को संरक्षण प्रदान करने के लिए यथाशीघ्र पाटनरोधी शुल्क लागू करें।
- (ग) प्राधिकारी को प्रमुख कच्चे माल और ऊर्जा की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों को ध्यान में रखने के बाद ईरान से उत्पादकों के लिए सामान्य मूल्य संरचित करना चाहिए।

### **प्राधिकारी की जांच**

73. प्राधिकारी ने उत्पादकों/निर्यातकों और घरेलू उद्योग के उपरोक्त तर्कों की जांच की है। यह नोट किया जाता है कि कुछेक निवेदन पुनरावृत्ति प्रकृति के हैं और प्राधिकारी ने जितना प्रासंगिक और आवश्यक समझा गया है, उनका समाधान प्रकटन विवरण में पहले से ही कर दिया है। तथापि, प्रासंगिक पाए गए निवेदनों का पुनः समाधान इस अंतिम जांच परिणाम में किया गया है, जोकि नीचे दिया गया है :-

74. प्राधिकारी ने डी जी ए डी की सुसंगत पद्धति के अनुसार, उनके पास उपलब्ध श्रेष्ठ तथ्यों को ध्यान में रखकर अर्दाकन का सामान्य मूल्य संरचित किया है। इसके अतिरिक्त, एक विशिष्ट सहयोगी निर्यातक द्वारा प्रदान किए गए आंकड़ों/सूचना के आधार पर निर्धारित किए गए सामान्य मूल्य को तथ्यतः अन्य उत्पादकों के लिए सामान्य मूल्य नहीं माना जा सकता है क्योंकि उसकी लागत और कीमतें संबंधित निर्यातक विशिष्ट होती हैं। इसके अलावा, यह भी नोट किया जाता है कि अर्दाकन का उत्पादक अनेक अवसर प्रदान करने के बावजूद भी अपनी लागत को अधिप्रमाणित करने में विफल रहा है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि उत्पादक के परिसर में सत्यापन की कार्रवाई के दौरान वह लागत के संबंध में अपने पूर्ण तथ्यों को अधिप्रमाणित नहीं कर सका था तथापि, निर्यातक के संबंध में उपलब्ध सूचना का सत्यापन किया गया था और तदनुसार, इस प्रकटन विवरण में उस पर विचार किया गया है। इन परिस्थितियों में प्राधिकारी के पास नियम 6(8) में उल्लिखितानुसार सामान्य मूल्य की संरचना करने के सिवाय और कोई विकल्प नहीं है। साथ ही, यह भी स्पष्ट किया जाता है कि प्राधिकारी ने उनके लिए सामान्य मूल्य की संरचना करते समय कोई प्रतिकूल तथ्य लागू नहीं किए हैं।

75. रिकॉर्ड पर सत्यापित सामग्री से यह स्पष्ट पता चलता है कि ईरान से कम कीमतों के आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों में ह्रास/न्यूनीकरण हुआ है। इसके अतिरिक्त, कीमत में कटौती और कम कीमत पर बिक्री सकारात्मक है जिससे घरेलू उद्योग पर पड़े नकारात्मक प्रभाव का स्पष्ट पता चलता है। क्षति और कारणात्मक संबंध के बारे में अन्य निवेदनों तथा उनका समाधान इस अंतिम जांच परिणाम में संबद्ध भाग में विस्तार से किया गया है।

76. घरेलू उद्योग के इन निवेदनों के संबंध में कि प्रमुख कच्चे माल और ऊर्जा की कीमतें, बाजार कीमतों को सही रूप से प्रदर्शित नहीं करती हैं, यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग ने विशेष बाजार स्थिति के अपने दावे को प्रमाणित करने के लिए कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है।

### **ख. निष्कर्ष**

77. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदनों और उनमें उठाए गए मुद्दों तथा मौखिक सुनवाई में प्राधिकारी के समक्ष व्यक्त किए गए विचारों की जांच करने तथा इस परिणाम में रिकार्ड पर यथा उपलब्ध तथ्यों की जांच करने के बाद प्राधिकारी का यह निष्कर्ष है कि:-

- (1) भारत को संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के निर्यात, उसके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किए गए हैं जिसके परिणाम स्वरूप पाटन हुआ है।
- (2) संबद्ध देश से विचाराधीन उत्पाद के पाटन के कारण घरेलू उद्योग को आर्थिक क्षति हुई है।
- (3) पाटित आयातों के कारण आर्थिक क्षति हुई है।

### **ड. भारतीय उद्योग के हित और अन्य मुद्दे**

78. प्राधिकारी इस बात को मानते हैं कि पाटन-रोधी शुल्क लगाने से भारत में उत्पाद की कीमत स्तर पर प्रभाव पड़ सकता है। तथापि, पाटन-रोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्द्धा कम नहीं होगी। इसके विपरीत पाटन-रोधी उपाय करने से पाटन की पद्धतियों द्वारा अनुचित लाभ प्राप्त करने की अनुचित प्रक्रिया समाप्त होगी, घरेलू उद्योग में होने वाली गिरावट रुकेगी तथा उपभोक्ताओं की व्यापक पसंद की संबद्ध वस्तुओं की उपलब्धता बढ़ाने में सहायता मिलेगी। पाटन-रोधी शुल्कों का प्रयोजन सामान्यतया पाटन की अनुचित व्यावहारिक पद्धतियों द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त

करना है, ताकि भारतीय बाजार में ऐसा खुला और उचित प्रतिस्पर्द्धी वातावरण बहाल किया जा सके, जो कि देश के सामान्य हित में हो। इसलिए पाटन-रोधी शुल्क लगाए जाने से किसी भी तरह से उपभोक्ताओं को उत्पादों की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटन-रोधी उपाय लागू करने से किसी भी तरह से ईरान से आयात प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसलिए ये उपभोक्ताओं को उत्पाद की उपलब्धता को प्रभावित नहीं करेंगे। उपभोक्ता अभी भी आपूर्ति के दो अथवा उससे अधिक स्रोतों को बनाए रख सकते हैं।

#### ढ. सिफारिशें

79. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदनों और उनमें उठाए गए मुद्दों की जांच करने तथा रिकार्ड पर उपलब्ध तथ्यों को ध्यान में रखने के बाद प्राधिकारी का यह निष्कर्ष है कि:-

- (1) भारत को ईरान से विचाराधीन उत्पाद के निर्यात, उनके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किए गए हैं।
- (2) घरेलू उद्योग को आर्थिक क्षति हुई है।
- (3) ईरान से संबद्ध वस्तुओं के पाटित आयातों के कारण आर्थिक क्षति हुई है।

80. प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह जांच शुरू की गई थी और इसकी सूचना सभी हितबद्ध पक्षकारों को दी गई थी तथा निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंध के पहलुओं पर सार्थक सूचना प्रदान करने का पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया था। पाटन-रोधी नियमावली के अनुसार पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंध की जांच शुरू की गई थी और उसका संचालन किया गया था तथा सार्थक पाटन मार्जिन के साथ-साथ ऐसे पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को हुई आर्थिक क्षति की पुष्टि हो जाने पर, प्राधिकारी का यह विचार है कि पाटन और क्षति को समाप्त करने के लिए पाटन-रोधी शुल्क लगाए जाने की आवश्यकता है। इसलिए प्राधिकारी यह आवश्यक समझते हैं कि नीचे वर्णित रूप में और तरीके से ईरान से संबद्ध वस्तुओं के आयात पर निश्चयात्मक पाटन-रोधी शुल्क लगाया जाए।

81. प्राधिकारी द्वारा अपनाए जाने वाले कमतर शुल्क के नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी इस प्रकार निर्धारित पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन में से कम मार्जिन के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क को लागू करने की सिफारिश करते हैं, ताकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति को दूर किया जा सके। तदनुसार ईरान से मूल रूप से होने वाले अथवा किए जाने वाले निर्यात के लिए संबद्ध वस्तुओं के सभी आयातों पर केन्द्रीय सरकार द्वारा नीचे तालिका में निर्दिष्ट राशि के बराबर पाटन-रोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की जाती है :

शुल्क तालिका

क्रमांक	उप-शीर्ष	वस्तुओं का विवरण*	उदगम देश	निर्यातक देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि	मापन का यूनिट	मुद्रा
1.	7003, 7004, 7005, 7009, 7013, 7015, 7016, 7018, 7019, 7020	बीआईएस 14900:2000 के अनुसार न्यूनतम मोटाई 4 मिमी. से 12 मिमी. (दोनों सम्मिलित) के क्लियर फ्लोट ग्लास	ईरान	ईरान	मेसर्ज कावेह फ्लोट ग्लास कंपनी, ईरान	मेसर्ज बिस्माक जीएम बीएच, जर्मनी	NIL	मी.टन	अम. डालर

2.	वही	वही	ईरान	ईरान	मेसर्ज अर्दाकन फ्लोट ग्लास कंपनी, ईरान	मेसर्ज सिंबल व्हाइट इंटरनेशनल एलएलसी, ओमन	52.32	मी.टन	अम. डालर
3.	वही	वही	ईरान	ईरान	क्रमांक 1 और 2 से भिन्न कोई अन्य देश	क्रमांक 1 और 2 से भिन्न कोई अन्य देश	55.59	मी.टन	अम. डालर
4.	वही	वही	ईरान	कोई	कोई	कोई	55.59	मी.टन	अम. डालर

**82.** इस अधिसूचना के प्रयोजनार्थ आयातों का पहुंच मूल्य, सीमा-शुल्क अधिनियम, 1962 (1962 का 52) द्वारा यथा निर्धारित मूल्यांकन योग्य मूल्य होगा और उसमें उक्त अधिनियम की धारा 3, 3क, 3ख, 9 और 9 क के अंतर्गत शुल्कों को छोड़ कर सभी सीमा-शुल्क शामिल होंगे।

**83.** इस अंतिम जांच परिणाम के परिणामस्वरूप केन्द्र सरकार के आदेश के विरुद्ध कोई भी अपील सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम के अनुसार सीमा-शुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण (सीईएसटीएटी) के समक्ष दायर की जाएगी।

डॉ. इंद्रजीत सिंह, अपर सचिव एवं निर्दिष्ट प्राधिकारी

## MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

### NOTIFICATION

New Delhi, the 20th March, 2017

### Final Findings

**Subject :** Anti-Dumping Investigation concerning import of “Clear Float Glass of nominal thicknesses ranging from 4mm to 12mm (both inclusive)” originating in or exported from Iran.

**No. 14/7/2015-DGAD.**—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975, as amended from time to time (hereinafter also referred to as the Act), and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, as amended from time to time, (hereinafter also referred to as the Rules) thereof;

2. Whereas the Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority), under the Rules, received a written application from M/s. Gold Plus Glass Industry Ltd., M/s. HNG Float Glass Ltd. and M/s. Saint-Gobain India Private Ltd., ( hereinafter also referred to petitioners or applicants) alleging dumping of Clear Float Glass of nominal thicknesses ranging from 4mm to 12mm (both inclusive) (hereinafter also referred to as subject goods) from Iran (hereinafter also referred to as subject country).

3. Whereas the Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the applicant on behalf of the domestic industry, issued a public notice dated 23rd December, 2015 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti-dumping investigations concerning imports of the subject goods, originating in or exported from the subject countries, in accordance with the sub-Rule 6(1) of the Rules, to determine the existence, degree and effect of alleged dumping and to consider recommendation of the anti-dumping duty.

**A. PROCEDURE**

4. The following Procedure described below has been followed with regard to this investigation:
- i. The Authority notified the embassy of the subject country in India about the receipt of dumping application before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-Rule 5(5) of the Anti-Dumping Rules.
  - ii. The Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the applicant on behalf of the domestic industry, issued a public notice dated 23rd December, 2015, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti-dumping investigation concerning imports of the subject goods, originating in or exported from Iran.
  - iii. The Authority forwarded a copy of the public notice to all the known exporters and other interested parties (whose details were made available by the Applicant) and industry associations and gave them opportunity to make their views known in writing in accordance with the Rule 6(2) of the Anti-dumping Rules.
  - iv. The Authority provided a copy of the non-confidential version of the application to the known exporters and the embassy of the subject country in India in accordance with Rule 6(3) of the Anti-dumping Rules. A copy of the Application was also made available to other interested parties, upon request.
  - v. The Authority sent questionnaires to elicit relevant information to the following known exporters in subject countries in accordance with Rule 6(4) of the Antidumping Rules:
    - a. M/s. Ardakan Float Glass Co., Iran
    - b. M/s. Kaveh Float Glass Company, Iran
  - vi. Response to questionnaire was filed by M/s. Ardakan Float Glass Co., Iran, and its related exporter from Oman M/s. Symbol White International L.L.C, Oman, M/s. Kaveh Float Glass Company, Iran and its related exporter from Germany M/s. Bismaak GMBH, Germany.
  - vii. Questionnaires were sent to the following known importers/users / associations of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the Anti-dumping Rules:
    - 1 Atlantic Trading – Mumbai
    - 2 Kanch Ghar – Mumbai
    - 3 Rajat Glass Traders – Karad
    - 4 Chandan Glass Traders – Pune
    - 5 Kochhar Glass Traders – Bhopal
    - 6 Ganeriwala Brothers Pvt Ltd – Kolakata
    - 7 Sure Safe Group/ Ganeriwala Glass Traders Kolkata
    - 8 Ridhi Sidhi, Jaipur
    - 9 T. L. Verma, Chandigarh
    - 10 Jagdamba Glass, Delhi
    - 11 Sheesh Mahal Tuff, Rohtak
    - 12 Nutan Glass Hs(P) Ltd, Bangalore
    - 13 Mahaveer Glass Hs, Bangalore
    - 14 Impact Safety Glass (P) Ltd, Bangalore
    - 15 Mahaveer Glass, Chennai/Navakar/Mahaveer Mirror, Vishakhapatnam
    - 16 All India Flat Glass Manufacturers Association
    - 17 Federation of Safety Glass
  - viii. None of the importer has responded to the initiation notification. In addition to above Iran Glass Association also made submissions during the course of the proceedings.

- ix. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.
- x. Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange for details of imports of subject goods for the past three years and the period of investigation. The Authority has, therefore, relied upon the DGCI&S data for computation of the volume of imports.
- xi. Optimum cost of production and cost to make & sell the subject goods in India based on the information furnished by the domestic industry on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) was worked out so as to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry. The NIP has been determined by the Authority in terms of the principles laid down under Annexure III to the Anti-Dumping Rules.
- xii. Information provided by interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims, wherever warranted and such information has been considered confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis was directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis.
- xiii. In accordance with Rule 6(6) of the Anti-Dumping Rules, the Authority also provided opportunity to the interested parties to present their views orally in hearing held on 8th July, 2016. The parties, which presented their views in the oral hearings, were requested to file written submissions of the views expressed orally, followed by rejoinder submissions. The Authority again provided opportunity to the interested parties, in view of new Designated Authority in place, to present their views orally in hearing held on 2.11.2016. The parties, which presented their views in the oral hearings, were requested to file written submissions of the views expressed orally, followed by rejoinder submissions.
- xiv. The submissions made by the interested parties during the course of the investigation have been considered by the Authority, wherever found relevant, in this finding. Verification to the extent deemed necessary was carried out in respect of the information & data submitted by the domestic industry.
- xv. Investigation was carried out for the period starting from 1st January 2014 to June 2015 (POI). The examination of trends, in the context of injury analysis, covered the period from April 2011-March 2012, April 2012-March 2013 April, April 2013-March 2014 and the POI.
- xvi. The submissions made by the interested parties during the course of the present investigation and considered relevant by the Authority have been addressed in this disclosure statement.
- xvii. \*\*\*In this disclosure statement represents information furnished by an interested party on confidential basis, and so considered by the Authority under the Rules.
- xviii. The average exchange rate of 1US\$ = Rs 62.51 prevailing during the POI has been adopted by the Authority in this finding.

## **B. Product Under Consideration and Like Article**

### **Submissions made by producers/exporters/importers/other interested parties**

5. None of the exporters, importers or consumers has offered any views with regard to product under consideration.

### **Submissions made by the Domestic Industry**

6. The product under consideration for the purpose of present investigation is “Clear Float Glass of nominal thicknesses ranging from 4mm to 12mm (both inclusive)”, the nominal thickness being as per BIS14900:2000.

7. Clear Float Glass is used in construction, refrigeration, mirror and solar energy industries etc. The product is a superior quality of glass. Due to its inherent strength, high optical clarity, distortion free smooth surface etc., the applications of the product have been increasing for different purposes.

8. Float Glass is classified under Chapter Heading 70 “Glass and glassware”. However, the subject goods are also being imported under tariff headings 7003, 7004, 7005, 7009, 7019, 7013, 7015, 7016, 7018 and 7020. It is also submitted that the custom classification is indicative only and in no way, it is binding upon the product scope of the Customs Tariff Act, 1975.

9. There is no known difference in the subject goods produced by the domestic industry and that imported from the subject countries. The subject goods produced by the domestic industry and the subject goods imported from subject countries are comparable in terms of characteristics such as physical and chemical characteristics, manufacturing process and technology, functions and uses, product specifications, distribution and marketing & tariff classification of the goods.

**Examination of the Authority**

10. The product under consideration for the purpose of present investigation is “Clear Float Glass of nominal thicknesses ranging from 4mm to 12mm (both inclusive)”, (hereinafter referred to as the “subject goods”).

11. Clear Float Glass is used in construction, refrigeration, mirror and solar energy industries etc. The product is a superior quality of glass. Due to its inherent strength, high optical clarity, distortion free smooth surface etc., the applications of the product have been increasing for different purposes and classified under Chapter Heading 70 “Glass and glassware”. However, the subject goods are also being imported under tariff headings 7003, 7004, 7005, 7009, 7019, 7013, 7015, 7016, 7018 and 7020. It is also submitted that the custom classification is indicative only and in no way, it is binding upon the product scope of the Customs Tariff Act, 1975.

12. With regard to like article, Rule 2(d) of the Anti-dumping Rules provides as under:

*"like article" means an article which is identical or alike in all respects to the article under investigation for being dumped in India or in the absence of such article, another article which although not alike in all respects, has characteristics closely resembling those of the articles under investigation."*

13. The Authority notes that there is no known difference in product under consideration produced by the Indian industry and exported from subject country. Product under consideration produced by the Indian industry and imported from subject country is comparable in terms of characteristics such as physical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The subject goods produced by the domestic industry are like article to the product under consideration imported from subject countries within the scope and meaning of Rule 2(d) of anti-dumping Rules.

**C. Domestic Industry and Standing****Submissions made by producers/exporters/importers/other interested parties**

14. It is contended by certain interested parties that the Domestic Industry has withheld the information relating to production in the non-confidential version because they does not have the standing in terms of Rule 2(b).

**Submissions made by the Domestic Industry**

15. The petition has been filed by M/s. Gold Plus Glass Industry Ltd., M/s. HNG Float Glass Ltd. (HNG) and M/s. Saint-Gobain India (Pvt.) Ltd. (SGIPL), accounting for more than 50% of the total Indian production. Moreover, it is submitted that the petitioners have neither imported the subject goods from subject country nor they are related to any importer of the subject goods from subject country. Therefore, the applicants satisfy the requirements of ‘standing’ under Rule 5 of the AD Rules and also constitute ‘Domestic Industry’ in terms of Rule 2(b) of the AD Rules.

**Examination of the Authority**

16. Rule 2(b) of the AD Rules defines domestic industry as under: -

*“domestic industry” means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in such case the term ‘domestic industry’ may be construed as referring to the rest of the producers”*

17. The Application has been jointly filed by M/s. Gold Plus Glass Industry Ltd., M/s. HNG Float Glass Ltd. and M/s. Saint-Gobain India (Pvt.) Ltd and they constitute 84% of the total production. There are two other producers, namely M/s. Asahi India Glass Limited (AIS) and Gujarat Guardian Ltd. (GGL) who had neither supported nor opposed the petition. The Authority notes that the petitioners account for a major proportion in total production of the like product produced in India. It is further noted that none of petitioners has imported the product under consideration, nor they are related to an importer or exporter of the product under consideration. Therefore, the petitioners constitute ‘Domestic Industry’ in terms of Rule 2(b) of the AD Rules. Since the application is filed by applicants account for more than 50% of the total domestic production, it satisfies the requirements of ‘standing’ under Rule 5 of the AD Rules.

**D. Confidentiality****Submissions made by producers/exporters/importers/other interested parties**

18. The various submissions made by the producers/exporters/importers/other interested parties during the course of the present investigation with regard to confidentiality and considered relevant by the Authority are as follows:



- i. The petition suffers from excessive confidentiality. The petition provides absolutely no information with respect to volume related information also.
- ii. Information relating to petitioner's policy regarding its distribution channels, commission/discount policy, credit terms, normal value calculation etc also kept as confidential.
- iii. The domestic industry has claimed and has been allowed excessive confidentiality in the sense that they have not made available their annual report in the public file.
- iv. Domestic Industry has also not provided the details of their costing.

#### **Submissions made by the domestic industry**

19. The various submissions made by the domestic industry with regard to confidentiality and considered relevant by the Authority are as follows:

- i. Excessive confidentiality has been claimed by the exporters. Exporters had not only claimed confidentiality on the volume related information but also kept certain narrative portion of the response as confidential.
- ii. Non-confidential versions of the questionnaire response were not the exact replica of the confidential version filed by the exporters.
- iii. Petitioner has claimed confidentiality on information provided by them as allowed in rule 7 of the AD rules and a meaningful summary of such information with narrative description were also provided in the non-confidential version of the petition. The claims of interested parties that the petitioner has claimed excessive confidentiality are baseless.

#### **Examination of the Authority**

20. The various submissions made by the interested parties during the course of the present investigation with regard to confidentiality and considered relevant by the Authority are examined and addressed as follows:

- i. With regard to confidentiality of information Rule 7 of Anti-dumping Rules provides as follows:-

*Confidential information: (1) Notwithstanding anything contained in sub-rules and (7) of rule 6, sub-rule (2), (3) (2) of rule 12, sub-rule (4) of rule 15 and sub-rule (4) of rule 17, the copies of applications received under sub-rule (1) of rule 5, or any other information provided to the designated authority on a confidential basis by any party in the course of investigation, shall, upon the designated authority being satisfied as to its confidentiality, be treated as such by it and no such information shall be disclosed to any other party without specific authorization of the party providing such information.*

*(2) The designated authority may require the parties providing information on confidential basis to furnish non-confidential summary thereof and if, in the opinion of a party providing such information, such information is not susceptible of summary, such party may submit to the designated authority a statement of reasons why summarization is not possible.*

*(3) Notwithstanding anything contained in sub-rule (2), if the designated authority is satisfied that the request for confidentiality is not warranted or the supplier of the information is either unwilling to make the information public or to authorise its disclosure in a generalized or summary form, it may disregard such information.*

- ii. Information provided by the interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims, wherever warranted and such information has been considered confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis was directed to provide sufficient non confidential version of the information filed on confidential basis. The Authority made available the non-confidential version of the evidences submitted by various interested parties in the form of public file.

#### **E. Miscellaneous Submissions**

##### **Submissions made by producers/exporters/importers/other interested parties**

21. The miscellaneous submissions made by the producers/exporters/importers/other interested parties during the course of the present investigation and considered relevant by the Authority are as follows:

- i. The application filed by the Domestic Industry is not in the form and manner prescribed by the Authority.
- ii. The petition is deficient and therefore the investigation needs to be terminated.
- iii. Certifications provided by Domestic Industry are not correct and even not covering the complete period of investigation.

- iv. Domestic Industry has not provided complete information in Proforma IV B in the non-confidential version as per the formats prescribed by the Authority.

#### **Submissions made by the Domestic Industry**

22. The miscellaneous submissions made by the domestic industry during the course of the present investigation and considered relevant by the Authority are as follows:

- i. The supply chain of responding exporters are not complete and therefore, their response needs to be rejected.
- ii. Exchange rate for POI prevailing in Iran, Oman and Germany needs to be disclosed. Further, Domestic Industry also requested the Authority to disclose whether producers / exporters are claiming weighted average rate or monthly.
- iii. With regard to initiation, the Authority notes the said certificates were signed prior to initiation. However, since the Authority extended the POI at the time of initiation, the certificates were again signed post-initiation for revised POI for January 2014 to June 2015.
- iv. In relation to filing incomplete information, it is submitted that the Domestic Industry has provided all the information as per prescribed format.

#### **Examination of the Authority**

23. The various miscellaneous issues raised by the interested parties during the course of the present investigation and considered relevant by the Authority are examined herein below:

- a. As regards the argument of the opposite interested parties that the petition is deficient and therefore the investigation needs to be terminated, the Authority notes that the present investigation was initiated on the basis of *prima facie* evidence furnished by the domestic industry showing dumping, injury and dumping causing injury to the domestic industry. There was sufficient evidence to justify the initiation of the anti-dumping investigation and it is in accordance with the AD Act and Rules. The Authority also called additional information wherever required and verified the information furnished by the domestic industry.
- b. With regard to the argument on certificates, it is noted that the same are complete and correct for the period of investigation. In the context of certain deficient formats, it is noted that the same were complete and as per the prescribed formats.
- c. In relation to the allegation of the Domestic Industry that supply chain of the responding interested party are not complete, the same have been discussed under the relevant paragraphs relating to the computation of dumping margin.

#### **DUMPING MARGIN**

#### **MARKET ECONOMY TREATMENT (MET), NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DUMPING MARGIN**

24. While the domestic industry submitted that considering China as a non market economy, normal value for China PR should be determined in terms of Para 7 of Annexure-I of the Anti-Dumping Rules, on the basis of cost of production in India, duly adjusted, including selling, general and administrative expenses and reasonable profit, none of the exporters, importers, users and other interested parties has made any relevant submission in this regard. None of the respondent Chinese producers/exporters in the present investigation have filed Market Economy Treatment questionnaire response and claimed market economy treatment.

#### **F. Determination of Normal Value**

##### **Normal Value**

25. Under Section 9A (1) (c), normal value in relation to an article means:-

- (i) *the comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or*
- (ii) *When there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either-*
  - (a) *Comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or*

- (b) *the cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6):*

*Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transhipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.*

#### **Provisions relating to Non- Market Economy countries**

26. Annexure-I to AD rules states as under:

*7. In case of imports from non-market economy countries, normal value shall be determined on the basis if the price or constructed value in the market economy third country, or the price from such a third country to other countries, including India or where it is not possible, or on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a reasonable profit margin. An appropriate market economy third country shall be selected by the designated authority in a reasonable manner, keeping in view the level of development of the country concerned and the product in question, and due account shall be taken of any reliable information made available at the time of selection. Accounts shall be taken within time limits, where appropriate, of the investigation made in any similar matter in respect of any other market economy third country. The parties to the investigation shall be informed without any unreasonable delay the aforesaid selection of the market economy third country and shall be given a reasonable period of time to offer their comments.*

*8. (1) The term “non-market economy country” means any country which the designated authority determines as not operating on market principles of cost or pricing structures, so that sales of merchandise in such country do not reflect the fair value of the merchandise, in accordance with the criteria specified in sub-paragraph (3)*

*(2) There shall be a presumption that any country that has been determined to be, or has been treated as, a non-market economy country for purposes of an anti-dumping investigation by the designated authority or by the competent authority of any WTO member country during the three year period preceding the investigation is a nonmarket economy country*

*Provided, however, that the non-market economy country or the concerned firms from such country may rebut such a presumption by providing information and evidence to the designated authority that establishes that such country is not a non-market economy country on the basis of the criteria specified in sub-paragraph (3)*

*(3) The designated authority shall consider in each case the following criteria as to whether:*

- (a) the decisions of the concerned firms in such country regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment, are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values;*
- (b) the production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;*
- (c) Such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms, and*
- (d) The exchange rate conversions are carried out at the market rate.*

*Provided, however, that where it is shown by sufficient evidence in writing on the basis of the criteria specified in this paragraph that market conditions prevail for one or more such firms subject to anti-dumping investigations, the designated authority may apply the principles set out in paragraphs 1 to 6 instead of the principles set out in paragraph 7 and in this paragraph”*

#### **Submissions made by producers/exporters/importers/other interested parties**

27. The submissions concerning normal value, export price and dumping margin made by the producers/exporters/importers/other interested parties during the course of the investigation and considered relevant by the Authority are as follows:

- i. The Domestic Industry did not produce any evidence in support of their claim for normal value as well as export price. In this connection, it is submitted that no investigation is tenable without the fulfilment of the basic evidentiary standards and, therefore, the present investigation must be terminated immediately.

- ii. The conditions specified in the relevant provisions do not include “non-availability” of data relating to domestic selling prices as a ground for construction of normal value. The basis stated in the application for resorting to constructed normal value is thus erroneous.
- iii. The estimate of inland freight, ocean freight, commission, etc., provided by the Domestic Industry is also not supported by any evidence. The application did not contain any evidence as to how the figures cited were arrived at and what the relevant calculations are.
- iv. The normal value and export price arrived at by petitioners in the petition cannot be accepted as correct since petitioners have not made available any evidence to support their computations.
- v. The Designated Authority has also not followed the prescribed procedure with regard to Normal Value terms of paragraph 7 of Annexure I of the Anti-dumping Rules.
- vi. The adjustments made by the Applicants with respect to the export price are abnormally high and unsupported by any evidence. Therefore, the Authority should use correct adjustments while computing Export price.
- vii. Total quantum of imports from Iran is very low and constitutes only around 4% of the demand in India and therefore, no duties should be recommended against imports from Iran.

#### **Submissions made by the Domestic Industry**

28. The submissions made by the domestic industry concerning normal value, export price and dumping margin and considered relevant by the Authority are as follows:

- a. Responding exporters from Oman and Germany have failed to provide the transaction-wise linkage between the subject goods procured from producers in Iran and exported to India. In view thereof, the responses of the exporters are liable to be rejected in line with the view taken by the Authority in recent findings.
- b. Responding exporter has specifically withheld information from the Authority in relation to supply of raw material and utilities. As per the understanding of the Domestic Industry, producers in Iran are getting raw materials and utility at less than market value. Even the costing heads have not been provided in Appendix 8, which gives rise to a suspicion that they are attempting to hide something or to mislead the Authority.
- c. Responding exporter has also misled the Authority by not disclosing the fact that there are significant differences in the export sales and domestic sales regarding packing, freight, delivery terms and payment terms while charting differences in export and domestic sales. Further, they have also not provided any details about service support they are providing in domestic market.
- d. Responding exporters have not provided any information about their SG&A expenses and profits which are required to be deducted to arrive at the ex-factory export price.
- e. The Authority should deduct complete SG&A and profit of exporters from the export price in addition to the actual expenses incurred by them to arrive at the ex-factory export price.

#### **Examination of the Authority**

29. Under section 9A (1) (c) normal value in relation to an article means:

- (i) The comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article, when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6), or
- (ii) When there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either
  - (a) comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
  - (b) the cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6);

30. The Authority sent questionnaires to the known exporters from the Iran, advising them to provide information in the form and manner prescribed. However, barring the following producer and exporters, none of the other producers/exporters from Iran co-operated in this investigation by filing the prescribed questionnaire responses,

- a. M/s. Ardakan Float Glass Co., Iran (Producer)
- b. M/s. Symbol White International L.L.C, Oman, (Exporter)
- c. M/s. Kaveh Float Glass Company, Iran (Producer)
- d. M/s. Bismaak GMBH, Germany (Exporter)

31. Since the above mentioned producers/exporters have filed the questionnaire response, the Authority proposes to determine individual dumping margin in respect of these companies. The general methodology adopted by the Authority for determination of Normal Value for these exporters is to first examine whether the domestic sales of the subject goods by the responding exporters in their home markets were representative and viable for permitting determination of Normal Values on the basis of domestic selling prices and whether the ordinary course of trade test was satisfied as per the data provided by the respondents. In other cases, i.e., where the domestic sales of the subject goods by the responding exporters in their home markets are not representative and viable for permitting determination of Normal Values on the basis of domestic selling prices and where the ordinary course of trade test is not satisfied, the costs of production including SG&A expenses claimed by the respective exporters is accepted after due verification and after adding 5% towards profit to arrive at the normal value.

32. In the case of non-cooperating exporters in the subject countries, the Authority proposes to determine the normal value on the basis of facts available in terms of Rule 6 (8) of AD Rules read with Article 6.8 of the Agreement.

33. The Authority proposes to determine the normal value, export price and dumping margin in respect of producers/exporters of the subject goods as follows:.

**Normal Value of M/s. Kaveh Float Glass Company, Iran. ("Kaveh")**

34. The questionnaire response filed by Kaveh has been examined and it is found that the respondent has provided domestic sales price details of the subject goods in Appendix-1 of their response. It was noted that the weighted average domestic selling price so determined was less than the weighted average domestic cost of production and it was also noted that the loss making transactions were more than 20% of the total sales. Therefore, the Authority has proceeded to determine the normal value based only on the profitable sales in terms of the provisions of Annexure I of the AD Rules. The adjustments claimed by Kaveh has been verified and accepted to the extent found correct. The proposed Normal value of Kaveh so determined works out to US\$ \*\*\* per MT.

**Export price of M/s. Kaveh Float Glass Co., Iran (Producer) and M/s. Bismaak GMBH, Germany (Exporter)**

35. As per the exporter's questionnaire response (EQR), M/s. Bismaak GMBH (Exporter from Germany) exported the subject goods produced by M/s. Kaveh Float Glass Co. from Iran (Producer). Both the companies have filed exporter questionnaire response. As per the EQ responses, during the POI, Kaveh Float Glass has exported 20,234 MT of subject goods to India through Bismaak GMBH. It is noted by the authority that Kaveh ships the finished subject goods directly to India and only the commercial invoicing is done through M/s. Bismaak GMBH. Adjustment on account of inland freight, overseas freight, clearance & handling charges has been claimed and the same have been accepted after necessary verification. The authority has also made adjustment of SG&A and profit of trader for determination of export price. The proposed export price for Kaveh has been determined at US\$ \*\*\* per MT.

**Normal Value in case of M/s. Ardakan Float Glass Co., Iran.**

36. The questionnaire response filed by the producer has been examined and certain deficiencies were pointed out to them during the course of investigation. Moreover, initially they have refused for their documents to be verified. However, during the second public hearing, their representatives submitted that they are willing for verification and, the Authority verified their data/information at their premises. However, during the verification visit also they have failed to produce satisfactory evidences in support of their information filed. In view thereof, their information in relation to normal value cannot be said to be reliable and, therefore, the Authority has constructed their normal value based on the best facts available as per Rule 6 (8) of AD Rules read with Article 6.8 of the Agreement. The proposed constructed normal value of the producer so determined works out to US\$ \*\*\* per MT.

**Export price in case of M/s. Ardakan Float Glass Co., Iran and M/s. Symbol White International L.L.C, Oman**

37. As per the exporter's questionnaire response (EQR), M/s. Symbol White International L. L. C (Exporter from Oman) exported the subject goods produced by M/s. Ardakan Float Glass from Iran (Producer). Both the companies have filed exporter questionnaire response. As per the EQ responses, during the POI, Ardakan Float Glass has exported 49,902 MT of subject goods to India through Symbol White. It is noted that Ardakan ships the finished subject goods directly to India and only the commercial invoicing is done through Symbol White. Adjustment on account of inland freight, overseas freight, clearance & handling charges has been claimed and the same have been accepted after necessary verification. The authority has also made adjustment of SG&A and profit of trader for determination of export price. The proposed export price for Ardakan has been determined at US\$ \*\*\* per MT.

**Normal value in the case of other producers and exporters from Iran**

38. In view of the non-cooperation of other exporters from Iran in this investigation, the normal value for other producers/exporters in Iran has been determined on the basis of facts available in terms of 6(8) of the Antidumping Rules and the same works out to US\$ \*\*\* per MT.

**Export price in case of other producers and exporters from Iran**

39. In view of the non-cooperation of other exporters from Iran in this investigation, the export price for other exporters has been determined on the basis of best facts available in terms of Rule 6(8) of the Antidumping Rules. The proposed net export price so determined works out to US\$ \*\*\* per MT.

**DUMPING MARGIN**

40. Considering the normal value and export price for subject goods as determined above, the dumping margin for the subject goods as a whole has been determined as follows,

Country	Exporter/Producer	Normal Value	Net Export Price	Dumping Margin		
		(US\$/MT)	(US\$/MT)	US\$/MT	%	Range
Iran	M/s Ardakan Float Glass Co., Iran (Producer) and M/s. Symbol White International L.L.C, Oman, (Exporter)	***	***	***	***	25 - 35
Iran	M/s Kaveh Float Glass Company, Iran (Producer) and M/s. Bismaak GMBH, Germany (Exporter)	***	***	***	***	(10)-5
Iran	others	***	***	***	***	25-35

**G. INJURY AND CAUSAL LINK****Submissions made by the producers/exporters/importers/other interested parties**

41. The following submissions have been made by the interested parties during the course of the present investigation and considered relevant by the Authority.

- Import prices have increased during the injury period and, therefore, the claim of the petitioner that the dumped imports are affecting profitability and its inability to increase its selling price has no merit, therefore, there is no volume loss.
- Imports from Iran are negligible to have caused any injury to the Domestic Industry.
- There has been admitted improvement in production, production capacity, sales, employment, productivity (per day as well as per employee), etc. Thus, injury claimed by domestic industry holds no merit.
- The real cause for the alleged injury if any to the petitioner is not dumping of subject goods but rather due to other reasons such as the internal competition with other domestic producers and un-mindful investments.

**Submissions made by the Domestic Industry**

42. The following are the injury related submissions made by the domestic industry during the course of the present investigation and considered relevant by the Authority:

- Imports of the product under consideration have shown significant increase over the years with a significant increase in POI;
- Imports have increased in relation to production and consumption in India;
- Market share of Iran in demand is significant. Market share of the domestic industry has decreased in the POI as compared to the base year. The same is due to significant imports from Iran;
- With reduction in the prices by the foreign producers, the only choice available to the Indian producers is to either realign their prices with the changes in the import prices or to lose orders and hence the market share;
- Domestic industry prices reflect the effect of the prices that are being offered by the importers in the domestic market;

- vi. Imported goods have been undercutting the prices of the domestic industry. Price undercutting in respect of the product under consideration is quite significant;
- vii. Inventories with the domestic industry increased in the POI as compared with the base year;
- viii. The profitability of the domestic industry has been severely affected in the period of investigation due to dumped imports from Iran. As a result of the increased volumes at dumped prices, the domestic industry is suffering injury during the injury investigation period. Further, it clearly indicates that the dumped imports from Iran have caused serious injury by preventing the domestic industry from increasing its prices to a remunerative level throughout the injury investigation period. Thus, the dumped imports have not only severely affected their profitability but also resulted in impediment of the legitimated return on investments to a very significant extent;
- ix. Decline in profitability of the domestic industry was due to significant increase in the import volume at non-remunerative prices from the subject countries.
- x. Increase in selling price was lower than the increase in cost of production and thus the dumped imports are creating price suppression effect on the domestic industry.
- xi. Domestic industry has suffered material injury in connection with dumping of subject goods from Iran. Further, the domestic industry is threatened with continued injury, should the present condition continue.

### **Examination of the Authority**

43. Article 3.1 of the WTO Agreement and Annexure-II of the AD Rules provide for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices, in the domestic market, for the like products; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute term or relative to production or consumption in India. With regard to the price effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress the prices to a significant degree, or prevent price increases, which would have otherwise occurred to a significant degree.

44. As regards the impact of the dumped imports on the domestic industry para (iv) of Annexure-II of the AD Rules states as follows.

*“The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the Industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of margin of dumping actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments.”*

45. The injury analysis made by the Authority hereunder addresses the various submissions made by the interested parties. For the examination of the impact of imports on the domestic industry in India, the Authority has considered such indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilization, sales quantum, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping etc. in accordance with Annexure II(iv) of the Rules supra.

46. The Authority proposes to compute the non-injurious price in accordance with Annexure 3 to the Anti-dumping Rules and the established practices of the DGAD.

### **H. Volume Effect of Dumped Imports**

#### **Import Volume and Market Share**

47. With regard to the volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. For the purpose of injury analysis, the Authority has relied on the import data procured from DGCI&S data. Further, the Authority has removed undumped import volume of M/s. Kaveh Float Glass Company, Iran from the total volume of imports from Iran as they are not dumped. The volume of imports of the subject good from Iran has been analyzed as under:

Particulars	Units	2011-12	2012-13	2013-14	POI	POI (Annualized)
Iran	MT	0	574	3067	67802	45201
Iran	Trend	0	100	534	11803	7869

Un-dumped Imports of Iran	MT				20234	13489
Dumped Imports of Iran	MT	0	574	3067	47568	31712
Dumped Imports of Iran	Trend		100	534	8281	5521
Other Countries	MT	24268	129878	49755	166005	110670
Other Countries	Trend	100	535	205	684	456
Total Imports Volume	MT	24268	130452	52822	233808	155872
Total Imports Volume	Trend	100	538	218	963	642
Demand	MT	749925	861209	843219	1381231	932853
Demand	Trend	100	115	112	184	124
<b>Market share in Imports</b>						
Dumped Imports of Iran	%	0.00%	0.44%	5.81%	20.00%	20.00%
Un-dumped Imports of Iran	%				9.00%	9.00%
Other Countries	%	100.00%	99.56%	94.19%	71.00%	71.00%
<b>Market share in Demand</b>	%					
Un-dumped Imports of Iran	%				1.46%	1.46%
Dumped Imports of Iran	%	0.00%	0.07%	0.36%	3.46%	3.46%
Other Countries	%	3.24%	15.08%	5.90%	12.02%	11.86%
<b>Total Domestic Sales</b>	%	96.76%	84.85%	93.74%	83.07%	83.29%

48. It is noted from the above table that dumped imports of the subject goods from Iran have increased in absolute terms in POI as compared to the year i.e., 2012-13 and 2013-14. It is also important to note that the imports from Iran were nil in the base year and therefore, this substantial increase imports during the injury period have caused injury to Domestic Industry.

49. Market share from Iran in relation to the overall imports has also gone up significantly from a mere 0.44% in the year 2012-13 to 20% during the POI. Similarly, the market share of Iran in the total demand has also increased from 0.07% to 3.46% during the same period. Thus, it is seen that the volumes of dumped imports from Iran have increased significantly in absolute terms as well as in relation to the overall demand in the country.

#### **Price Effect of Dumped Imports on the Domestic Industry**

50. With regard to the effect of the dumped imports on prices, the Designated Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like products in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. The impact on the prices of the domestic industry on account of the dumped imports from Iran has been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any. For the purpose of this analysis the cost of production, Net Sales Realization (NSR) and the Non-Injurious Price (NIP) of the Domestic industry have been compared with the landed cost of imports from Iran.



**Price Undercutting**

51. In order to determine whether the imports are undercutting the prices of the domestic industry in the market, the Authority has compared landed price of imports with net sales realization of the domestic industry.

Iran		2011-12	2012-13	2013-14	POI	POI (Annualized)
Landed price of Dumped Imports	Unit	0	10825	16321	17372	17372
Net Sales Realization	Rs./MT	***	***	***	***	***
Net Sales Realization- Trend	Trend	100	116	120	135	135
Price Undercutting	Rs./MT	***	***	***	***	***
Price Undercutting (%)	%	***	***	***	***	***
Price Undercutting (%)	Range %	0	75-85	20-30	30-40	30-40

**Price undercutting of cooperative exporters**

52. The Authority notes that the landed values of the subject goods were much below the selling price of the domestic industry showing significant price undercutting by the imports from Iran during the investigation period. The Authority finds merit in the argument of the Domestic Industry that it could not increase its selling price due to price pressure of low priced imports from Iran which have also increased substantially in quantitative terms in the POI.

POI		Kaveh	Ardakan
Landed Price	Rs/MT	***	***
Selling Price	Rs/MT	***	***
Price Undercutting	Rs/MT	***	***
Price Undercutting	%	***	***
Price Undercutting (%)	Range	15-25	15-25

**Price Underselling**

53. The Authority has also examined price underselling suffered by the domestic industry on account of dumped imports from Iran, as follows:

Particulars	Unit	Iran
NIP	Rs/MT	***
Landed price of Imports	Rs/MT	***
Price Underselling	Rs/MT	***
Price Underselling	%	***
Price Underselling	Range	40-50

**Price underselling of cooperative exporters**

54. It is noted from the above table that the domestic industry has suffered significant price underselling on account of imports of the subject goods from the subject countries.

Particulars	Unit	Kaveh	Ardakan
NIP	Rs/MT	***	***
Landed price of Imports	Rs/MT	***	***
Price Underselling	Rs/MT	***	***
Price Underselling	%	***	***
Price Underselling	Range	25-35	25-35

### Price Suppression and Depression

55. In order to determine whether the imports are suppressing or depressing the domestic prices and whether the effect of such imports is to suppress prices to a significant degree or prevent price increases which otherwise would have occurred to a significant degree, the Authority considered the changes in the costs and prices over the injury period. Table below shows the factual position:

Particulars	Unit	2011-12	2012-13	2013-14	POI	POI (Annualized)
Landed Value of Dumped Imports from Iran	Rs./MT	0	10825	16321	17372	17372
Index	Indexed		100	151	160	160
Cost of Sales	Rs./MT	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	109	117	115	115
Selling Price	Rs./MT	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	116	120	135	135

56. Since there were no imports from Iran in the year 2011-2012, it would be more appropriate to make comparisons with the year 2012-13. It is also noted from the table above that both the cost of sales as well as prices have increased in the POI as compared to the base year. However, it is also noted that during the entire injury investigation period the landed value has consistently remained significantly below the cost of production and selling price of the subject goods preventing the Domestic Industry from increasing its selling price. Accordingly, it is apparent that the dumped imports of subject goods from Iran have suppressed the domestic industry's prices.

### I. Economic Parameters of the Domestic Industry

57. Annexure II to the Anti-dumping Rules requires that the determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to consequent impact of these imports on domestic producers of such products, the Anti-dumping Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments.

58. The various injury parameters relating to the domestic industry are discussed herein below:

- i. **Market share:** The effect of the dumped imports on the domestic sales and the market share of the domestic industry has been examined as below:

	Unit	2011-12	2012-13	2013-14	POI	POI (Annualized)
Domestic Industry Sale	MT	486011	476297	558505	952692	635128
Domestic Industry Sale	Indexed	100	98	115	196	131
Sales of Other Domestic Producers	MT	239646	254459	231892	194731	141853
Sales of Other Domestic Producers	Indexed	100	106	97	81	59
Total Domestic Sales	MT	725657	730756	790397	1147423	776981

Total Domestic Sales	Indexed	100	101	109	158	107
Dumped Imports from Iran	MT	0	574	3067	47568	31712
Imports from Other Countries	MT	24268	129878	49755	166005	110670
Total Imports	MT	24268	130452	52822	233808	155872
Total Demand	MT	749925	861209	843219	1381231	932853
Trend	Indexed	100	115	112	184	124
Market share of Domestic Sales in demand	%	96.76%	84.85%	93.74%	83.07%	83.29%
Market share of Dumped Imports from Iran in Demand	%	0.00%	0.07%	0.36%	3.44%	3.40%
Market share of Other Countries in Demand	%	3.24%	15.08%	5.90%	12.02%	11.86%
Market share of Un-dumped Imports from Iran in Demand	%				1.46%	1.45%

As mentioned earlier, imports of the subject goods from Iran have increased in absolute terms throughout the injury investigation period. The imports have gone up from 0 MT in the base year of 2011-12 to 47568 MT (31712 MT annualized) during the POI, which shows a substantial increase in imports volume from Iran. It may also be noted that market share of domestic sales has decreased in the POI as compared to the all previous year whereas during the same period market share of imports from Iran increased substantially.

- ii. **Profitability:** It is noted that the Domestic Industry was in the process of recovering after the levy of anti-dumping duties against Saudi Arabia, UAE and Pakistan. However, low priced dumped imports from Iran have severely affected the profitability of the Domestic Industry. It is also seen that while the selling price saw an upward trend, however, it remained below the cost of production of the Domestic Industry resulting into continued losses to the Domestic Industry due to the overall pressure on their prices.

Particulars	Unit	2011-12	2012-13	2013-14	POI	POI (Annualized)
Cost of sales	Rs./MT	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	107	119	115	115
Selling price	Rs./MT	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	102	108	135	135
Profit/Loss	Rs./MT	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	70	96	8	8
Profit/Loss	Rs. Lacs	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	68	110	16	11
PBIT	Rs. Lacs	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	43	132	-109	-67

- iii. **Return on Investment:** The return on investment has seen similar trend as that of profitability as can be seen from the table below:

Particulars	Unit	2011-12	2012-13	2013-14	POI	POI (Annualized)
ROI	%	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	-100	-75	-109	-10	-7

It is seen that the ROI continued to be negative during the entire injury investigation period even after the anti-dumping duty in place on inputs from other sources.

- iv. **Production and Capacity Utilization:** It can be seen that the production of the Domestic Industry has increased which is largely due to the increase in production capacity which has increased by more than 29% keeping in view the increasing demand in the country. The capacity utilization of the Domestic Industry has remained in the same band. It is, however, noted that there are significant idle capacities lying with the Domestic Industry to cater to the increasing demand and, therefore, the Domestic Industry has suffered on account of significant idle capacities.

Particulars	Unit	2011-12	2012-13	2013-14	POI	POI (Annualized)
Capacity	MT	1047910	1080400	1080400	2031960	1354640
Capacity	Indexed	100	103	103	194	129
Total Production	MT	819328	858335	895189	1578509	1052339
Total Production	Indexed	100	105	109	193	128
Production - PUC	MT	527005	584789	620376	1118436	745624
Production - PUC	Indexed	100	111	118	212	141
Capacity Utilization	%	78%	79%	83%	78%	78%
Capacity Utilization	Indexed	100	102	106	99	99
Sales volume						
Domestic	MT	486011	476297	558505	952692	635128
Domestic	Indexed	100	98	115	196	131
Exports	MT	16269	19994	34510	45661	30441
Exports	Indexed	100	123	212	281	187
Total Sales	MT	502380	496390	593129	998550	665700
Total Sales	Indexed	100	99	118	199	133

- v. **Sales Volumes:** It is noted that the sales volume from the Table above that the sales of Domestic Industry has also gone up throughout the injury investigation period. The sales have gone up which reflects the increasing market size. However, the Authority notes that even though the Domestic Industry has been able to increase its sales volume, it has nevertheless suffered on the price front leading to losses.
- vi. **Inventories:** The data relating to inventory of the subject goods is shown in the following table:

Particulars	Unit	2011-12	2012-13	2013-14	POI	POI (Annualized)
Inventory	MT	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	109	60	77	77

It is noted from the above table that the inventory of the Domestic Industry increased in the POI as compared to the year 2013-14, the period from which imports from Iran has started coming in India in huge quantities. This increase in inventory in the POI has hampered the financial performance of the Domestic Industry.

- vii. **Employment and Wages:** The position with regard to employment and wages is as follows:

	Unit	2011-12	2012-13	2013-14	POI	POI (Annualized)
Employees	No.	1771	1757	1812	1828	1828
Trend	Indexed	100	99	102	103	103
Wages/employee	Rs	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	196	218	363	242

- viii. **Productivity:** It can be seen from the table below that productivity in terms of production per employee has increased in the POI as compared to the base year. Despite increase in productivity, the performance of the Domestic Industry continued to be negative in POI. Accordingly, productivity is not a factor that can be attributed to injury.

	Unit	2011-12	2012-13	2013-14	POI	POI (Annualized)
Production (MT)	MT	527005	584789	620376	1118436	745624
Employees	No.	1771	1757	1812	1828	1828
Production/employee	MT/No.	298	333	342	612	408
Trend	Indexed	100	112	115	206	137

- ix. **Magnitude of Dumping:** Magnitude of dumping is an indicator of the extent to which the dumped imports can cause injury to the domestic industry shows that the dumping margin determined against Iran is above *de minimis* and significant. The Authority has determined, that the dumping margin of the exporters range from (0) USD/MT to \*\*\* USD/MT, which is significantly high.
- x. **Ability to raise Capital Investment:** The future investment in the sector is marred by the presence of dumped imports from Iran. The negative profitability, return on investment along with reduced cash flow indicates that the ability of the domestic industry to raise capital investments for the sector is seriously affected due to the dumped imports from the subject country.
- xi. **Factors affecting domestic prices:** The examination indicates that there is a healthy demand for the subject goods in India. The low priced dumped import prices from Iran are directly affecting the prices of the domestic industry in the domestic market. It is also noted that the landed value of subject goods from Iran are significantly below the selling price and non-injurious price of the domestic industry causing significant price undercutting and underselling in the Indian market. The imports of the product under consideration from countries other than Iran and countries already attracting anti-dumping duties are not injuring the domestic industry or are at non-dumped prices as the prices offered by these countries are significantly higher. Demand for the product is showing an increasing trend and, therefore, could not have been a factor responsible for price depression and suppression faced by the domestic industry. It is thus evident that the dumped goods from Iran are responsible for the depressed and suppressed prices of the domestic industry.
- xii. **Growth:** There was positive growth of the domestic industry in terms of sales and production in the POI as compared to the base year. However, profits, cash profit as well as ROI remained negative in the POI as compared to the base year despite significant increase in demand. The domestic industry has contended that with increase in capacity, the domestic industry had expected growth in profits, comfortable cash flow and increase in return on investments. However, the domestic industry was not able to achieve the same due to the presence of the dumped imports from Iran.

#### J. Conclusion on Material Injury

59. After examining the volume and price effects of imports of subject goods from subject country and its impact on the domestic industry, the Authority concludes that the dumped imports of the subject goods from Iran increased significantly throughout the injury investigation period in absolute terms as also in relation to production and demand of the subject goods in India. With regard to price effect on account of imports of subject goods from Iran, it is noted that imports of the subject goods from Iran is significantly undercutting the prices of domestic industry. The domestic industry has also suffered price suppression on account of imports of product under consideration from Iran as sales price of subject goods has not increased in comparison to increase in cost of production of subject goods during the injury period. Comparison of the landed values with the non-injurious prices of the Domestic Industry also reveals significant price underselling. With regard to consequent impact of the dumped imports on the domestic industry, it is concluded that even though the performance of the domestic industry has marginally improved in respect of production, capacity utilization and domestic sales, the performance remained negative in respect of profit, return on investment, inventories. Thus, the Authority concludes that the domestic industry has suffered material injury due to dumped imports from Iran during the period of investigation.

#### K. Other Known Factors & Causal Link

60. Having examined the existence of material injury, volume and price effects of dumped imports on the prices of the domestic industry, in terms of its price undercutting, underselling and price suppression, and depression effects, other indicative parameters listed under the Indian Rules and Agreement on Anti-dumping have been examined by the Authority to see whether any other factor, other than the dumped imports could have contributed to injury to the domestic industry.

**(a) Volume and prices of imports from third countries**

61. Imports of the product under consideration from countries other than Iran are at higher prices. It is evidenced from the table below that the import prices from other countries including countries already attracting anti-dumping measures were much higher than import price from Iran. It is also noted that the imports from Egypt are more than the 3%. However, it was found that the same are coming at relatively high and un-dumped prices.

Particulars		2011-12	2012-13	2013-14	POI	POI (Annualized)
Import Volume	Unit					
Dumped Imports from Iran	MT	0	574	3067	47568	31712
Un-dumped Imports from Iran	MT	0	0	0	20234	13489
China	MT	4507	8434	557	14700	9800
Pakistan	MT		4922	1249	13312	8875
Saudi Arabia	MT	7281	80246	39403	90773	60515
UAE	MT	8139	32425	8375	25426	16951
Egypt	MT	2536	0	22	13221	8814
Other Countries	MT	1805	3851	149	8574	5716
Total Imports	MT	24268	130452	52822	233808	155872
Share in Import Volume from	MT					
Dumped Imports from Iran		0%	0%	6%	20%	20%
Un-dumped Imports from Iran		0%	0%	0%	9%	9%
China	%	19%	6%	1%	6%	6%
Pakistan	%	0%	4%	2%	6%	6%
Saudi Arabia	%	30%	62%	75%	39%	39%
UAE	%	34%	25%	16%	11%	11%
Egypt	%	10%	0%	0%	6%	6%
Other Countries	%	7%	3%	0%	4%	4%
Import Price (CIF Value per MT)	%					
Dumped Imports from Iran		0	9717	14650	15513	15513
Un-dumped Imports from Iran					17217	17217
China	Rs/MT	15705	18115	13611	19957	19957
Pakistan	Rs/MT	0	12536	14140	16446	16446
Saudi Arabia	Rs/MT	11287	11752	14092	16283	16283
UAE	Rs/MT	13579	12802	15630	17955	17955
Egypt	Rs/MT	13954	0	21583	19020	19020
Other Countries	Rs/MT	23437	21644	51173	22555	22555

**(b) Contraction of demand and changes in the pattern of consumption.**

62. There has been a constant rise in demand of the product concerned throughout the injury period. Therefore, decline in demand is not as a possible reason of injury to the Domestic Industry.

**(c) Developments in technology:**

63. Technology for production of the product concerned has not undergone any change. Thus, development in technology is also not a factor causing injury to the domestic industry.

**(d) Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers**

64. There is no trade restrictive practice, which could have contributed to the injury to the Domestic Industry as the raw materials as well as the subject goods are freely importable in the country.

**(e) Export performance of the domestic industry**

65. The exports of the domestic industry constitute an insignificant share in their total sales. In any case, the injury analysis has been done by the Authority taking into consideration their domestic operations only. Therefore, performance in the export market has not affected the present injury analysis.

**(f) Productivity of the Domestic Industry**

66. It is noted that the productivity of the domestic industry in terms of production per employee as well as production per day has increased over the period.

67. It is thus noted that listed known other factors do not show that the domestic industry could have suffered injury due to these other factors. None of the interested parties has also provided any evidence to suggest that the material injury caused to the Domestic Industry is attributable to other known factors. On the other hand, the following parameters show that injury to the domestic industry has been caused by dumped imports:

- a. The imports of subject goods from Iran were significantly undercutting the prices of the domestic industry in the market. Resultantly, the domestic industry was not able to increase its prices commensurate with the increasing costs. In fact, the Domestic Industry could not increase its prices in the POI to recover its cost. The price depression and price suppression suffered by the domestic industry is primarily on account of the dumped imports of the product from Iran.
- b. The pressure on the domestic prices of the domestic industry led to continued losses and negative return on investment during the POI. The disability to increase price coupled with the increasing costs has materially injured the financial performance of the Domestic Industry.

68. It is therefore, provisionally concluded that the domestic industry suffered material injury due to dumped imports from subject countries.

**L. Magnitude of Injury Margin****Injury Margin**

69. The non-injurious price of the Domestic Industry determined has been compared with the landed value of the exports from Iran for determination of injury margin during POI. The injury margin determined are as under:-

Iran	Unit	M/s Ardakan Float Glass Co., Iran and M/s. Symbol White International L.L.C, Oman	M/s Kaveh Float Glass Company, Iran and M/s Bismaak GMBH, Germany	Non-Co-operative producers/exporters
NIP	Rs./MT	***	***	***
Landed Price	Rs./MT	***	***	***
Price underselling	Rs./MT	***	***	***
Price underselling	%	***	***	***
Price underselling	Range	25-35	25-35	30-40

**M. Indian Industry's Interest & Other Issues:**

70. The Authority recognizes that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the product in India. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the imposition of anti-dumping measures. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of the subject goods. The purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping duties, therefore, would not affect the

availability of the product to the consumers. The Authority notes that the imposition of the anti-dumping measures would not restrict imports from Iran in any manner and, therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The consumers could still maintain multiple sources of supply.

**N. POST DISCLOSURE STATEMENT SUBMISSIONS BY THE INTERESTED PARTIES**

71. Following are in brief the post Disclosure Statement submissions made by Exporters

- a. That the Designated Authority should adopt Kaveh's normal value for determining the dumping margin for Ardakan as Kaveh's normal value amounts to best facts available with the Designated Authority.
- b. That in the present investigation, the essential facts disclosed in disclosure statement do not demonstrate that there is any dumping and consequent injury to the domestic industry.
- c. That the Designated Authority has not calculated the non-injurious price as per Annexure III of the AD rules. In determining the non-injurious price for domestic industry, the AD Rules provide that a reasonable rate of return should be considered. It is unjustified on the part of the Designated Authority to allow 22% rate of return as it has resulted in an unduly high non-injurious price and thus coloured the injury margins in this case. Reliance in this regard is placed on the ruling of the Hon'ble CESTAT in the case of Indian Spinners Association v. Designated Authority, 2004 (170) E.L.T. 144 (Tri. - Del.) wherein the Hon'ble CESTAT highlighted the importance of considering the historical rate of return of the domestic industry to determine the ROCE to be adopted in arriving at the non-injurious price.
- d. That the essential facts in the disclosure statement do not demonstrate that there is a causal link between alleged dumping and injury to the domestic industry. Production, sales, productivity and domestic selling prices have all improved significantly during the injury analysis period. Further, there is no price suppression and price depression in the facts of this case.
- e. That if the essential facts under consideration and observations change at any time, especially the normal value, export price and dumping margin determination, it is requested that another disclosure statement be issued to the Respondents under Rule 16 of the AD Rules for examination and comments. They further requested another hearing if any data or approach in the disclosure statement.

72. Following are in brief the post Disclosure Statement submissions made by the Domestic Industry:

- a. That the normal value for Iran ought to be rejected because of particular market situation being caused due to Less Than Adequate Remuneration in key raw materials like power and electricity. Domestic Industry also submitted that since the representative of the Iranian Embassy had categorically submitted that the producers of subject goods in Iran are getting cheaper raw materials, power and electricity and therefore, their cost of production is cheaper as compared to Indian cost of production. Therefore, there is no occasion for the Authority to accept their claim of normal value as prices of major raw materials and energy are not reflective of the market driven prices.
- b. That they are suffering continues injury from dumped and injurious imports from Iran and requested the Authority to impose the anti-dumping duties as early as possible to protect the Domestic Industry from injurious imports.
- c. That the Authority should have constructed the normal value for producers from Iran after considering the international prices of key raw materials and energy prices.

**Examination of the Authority**

73. The Authority has examined the above arguments of the producers / exporters, and the domestic industry. It is noted that some of the submissions are repetitive in nature and have already been dealt with by the Authority in the disclosure statement earlier to the extent considered relevant and necessary. However, the submissions considered relevant are being dealt with again in the Final Findings Notification as under:

74. The Authority has constructed the normal value of Ardakan taking the best facts available with the Authority, as per the consistent practice of the DGAD. Further, normal value determined on the basis of the data/information supplied by a particular cooperating exporter cannot be *ipso facto* taken as the normal value for other producers as the costs and prices are specific to the concerned exporter. Further, it is also noted that the producer Ardakan has failed to substantiate its cost despite being given several opportunities. Authority notes that during the course of verification at their premises they could not substantiate the full facts with regards to cost, however the information with regards to the export was verified and accordingly considered in this disclosure statement. Under the circumstances, the Authority is left with no other option but to construct the normal value in accordance to the Rule 6(8). It is also clarified at the same time that the Authority has not applied adverse facts while constructing normal value for them.

75. Verified material on record clearly shows that prices of Domestic Industry are suppressed / depressed due to the low prices imports from Iran. Moreover, the price undercutting and price underselling is positive, clearly showing the negative impact on the Domestic Industry. Other submissions relating to injury and causal link are dealt in details at the relevant section of the final findings.



76. In relation to the submissions of the Domestic Industry that the prices of the major raw materials and energy are not truly reflective of market prices, it is noted that the Domestic Industry has not provided any evidence to substantiate their claim of particular market situation.

## **O. CONCLUSIONS**

77. After examining the issues raised and submissions made view expressed in oral hearing, by the interested parties and facts made available before the Authority as recorded in this finding, the Authority concludes that:

- i. The product under consideration has been exported to India from Iran below its normal value, resulting in dumping.
- ii. The domestic industry has suffered material injury due to dumping of the product under consideration from the subject country.
- iii. The material injury has been caused by the dumped imports from the subject country.

## **P. Indian Industry's Interest & Other Issues:**

78. 70. The Authority recognizes that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the product in India. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the imposition of anti-dumping measures. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of the subject goods. The purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping duties, therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The Authority notes that the imposition of the anti-dumping measures would not restrict imports from Iran in any manner and, therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The consumers could still maintain multiple sources of supply.

## **Q. Recommendation**

79. After examining the submissions made by the interested parties and issues raised therein; and considering the facts available on record, the Authority concludes that:

- a. The product under consideration has been exported to India from Iran below their normal values.
- b. The domestic industry has suffered material injury.
- c. Material injury has been caused by the dumped imports of subject goods from Iran.

80. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the domestic industry, exporters, importers and other interested parties to provide positive information on the aspects of dumping, injury and the causal link. Having initiated and conducted investigation into dumping, injury and the causal link thereof in terms of the AD Rules and having established positive dumping margins as well as material injury to the domestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of definitive anti-dumping duty is required to offset dumping and consequent injury. Therefore, the Authority considers it necessary to recommend imposition of definitive anti-dumping duty on imports of the subject goods from Thailand in the form and manner described hereunder.

81. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of the margin of dumping and the margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, definitive antidumping duty as per amount specified in the table below is recommended to be imposed from the date of the Notification to be issued by the Central Government, on all imports of the subject goods originating in or exported from Iran.

## **Duty Table**

Sl. No	Sub-heading	Description of Goods*	Country of Origin	Country of Exports	Producer	Exporter	Amount	Unit of measurement	Currency
1	7003, 7004, 7005, 7009, 7013, 7015, 7016, 7018, 7019, 7020	Clear Float Glass of nominal thickness ranging from 4mm to 12mm (both inclusive), the nominal thickness as per BIS 14900:2000	Iran	Iran	M/s. Kaveh Float Glass Co., Iran	M/s. Bismaak GmbH, Germany	NIL	MT	US\$

2	Do	Do	Iran	Iran	M/s. Ardakan Float Glass Co., Iran	M/s. Symbol White International L.L.C., Oman	52.32	MT	US\$
3	Do	Do	Iran	Iran	Any Other than S. No. 1 & 2	Any Other than S. No. 1 & 2	55.59	MT	US\$
4	Do	Do	Iran	Any	Any	Any	55.59	MT	US\$

82. Landed value of imports for the purpose of this Notification shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 (52 of 1962) and includes all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the said Act.

83. An appeal against the order of the Central Government arising out of this finding shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act.

INDERJIT SINGH, Addl. Secy. & Designated Authority